

श्री यशोविजयञ्ज

ज्ञान ग्रंथभाण

दादासाहेब, लावनगर.

फोन : ०२७८-२४२५३२२

३००४८४९

गुरु श्री हीरसूरये ।

वीं शताब्दीके ॥

जयगुरु हीरसूरीश्वरजी



: लेखक :

पूज्यपाद आचार्यदेव श्री  
विजयभद्रंकरसूरीश्वरजी महाराज के शिष्यरत्न  
मुनि पुण्यविजय

: सहायक :

मद्रास के गुरुभक्त सुश्रावकोंके  
तरफसे सादर भेट

वी. सं. २४९७]

हीर सं. ३७५

[वि. सं. २०२७

श्री विजय भुवनतिलकसूरीश्वर जैन ग्रंथमाला-३१

लब्धि-भुवनतिलक-भद्रंकरसूरि गुरुभ्यो नमः :

卐 सोलवीं शताब्दीके 卐

# जगद्गुरु हीरसूरीश्वरजी

卐

: लेखक :

पूज्यपाद आचार्यदेव श्रीमद्

विजयभद्रंकरसूरीश्वरजी महाराज के शिष्यरत्न

मुनि पुण्यविजय

: सहायक :

L. I. C. Agents.

(Near Select Talkies)

मद्रास के गुरुमठ सुश्रावकोके

वरफसे सादर

SUBRAMANIA MUDALI

प्रकाशक :

श्री लब्धि भुवन जैन साहित्य सदन

c/o नटधरलाल चुनिलाल

छाणी (गुजरात)

जि. बडोदा



प्रथम संस्करण :

भेट

आत्म सं. ७५ लब्धि. सं. १०

प्राप्तिस्थान :

(१)

श्रीमान् पांचीलालजी कोचर

४२६, मिन्ट स्ट्रीट

मद्रास-१



(२)

मुद्रक :

गिरिधर आर्ट प्रिन्टर्स

१७/१९, बबरियन स्ट्रीट

मद्रास-१. फोन : २२७५४

जैन मीशन लायब्रेरी

४०८ मिन्ट स्ट्रीट

मद्रास-१

## : प्रकाशकीय :

आपके आगे एक ऐसे महापुरुष के जीवन चरित्र का ग्रंथ प्रकाशित कर रहे हैं कि, आप एक बार उसको पढ़ोगे तो आपके जीवनमें कुछ न कुछ परिवर्तन जरूर आयेगा ।

‘सोलवीं शताब्दी के जगद्गुरु हीरसूरीश्वरजी’ नामक ग्रंथ पूज्यपाद आचार्यदेव श्रीमद्विजय भद्रंकरसूरीश्वरजी महाराज के शिष्यरत्न पू. मुनिवर्य श्री पुण्यविजयजी महाराजने लिखा है ।

उक्त मुनिश्री हमारी संस्था किस तरह से सर्वजनबोधक-अभिनव प्रकाशनें शीघ्र प्रकाशित करके ज्ञानभक्ति की अपूर्व सेवा बनावें’ उनके कार्य में सदैव मग्न रहते हैं । अतः उन मुनिश्री का हम अत्यंत ऋणी हैं ।

हमारे संस्था के हिन्दी प्रकाशनों की प्रेसकाँपी करनेमें नवयुवक सुंदरलाल-मांगीलाल एवं कान्तिलाल और जैनमिशन सोसायटी ने अच्छा सहयोग दिया है । उन सबके हम आभारी हैं ।

ग्रंथ प्रकाशन में आर्थिक सहयोग देनेवाले महानुभावों को भी हार्दिक धन्यवाद देता हूँ । और प्रार्थना करता हूँ कि, आगे भी ऐसे प्रभावक महापुरुषों का जीवनचरित्र प्रकाशित करके आबालवृद्ध को गुरुगुणानुवाद को लाभ दें ।

जिससे अपना किमती जीवन कैसे सफल बनें वे विदित होवे ।



## : लेखक का वक्तव्य :

इस साल पू. गुरुदेव मद्रास चतुर्मास बीराजीत है । तब भा. सु. ११ के दिन मुगलसम्राट अकबर प्रतिबोधक स्व. पूज्यपाद आचार्यदेवश्री हीरसूरीश्वरजी महाराज की ३८५वीं पुण्यतिथि पूज्यश्री के निश्रामें ठाठ से मनाई गई थी ।

स्व. महापुरुषके निरतिचार चारित्र्यपालन, अजोड प्रभावक प्रवचन शक्ति, शासन सेवा-प्रभावना की भारी तमन्ना, निःस्पृहता, तपोनिधि आदि कई गुण-मौक्तिकों की श्रेणीको सुनकर संघ अत्यंत हर्षान्वित होकर कहने लगा, पू. हीरसूरिजी महाराजका जीवन इतना प्रभावक है । तो छोटे-छोटे बच्चे आदि उन महात्मा की जीवनी पढ़कर अपने 'जीवन-उपवनको गुणपुष्पोंसे' नदनवन सम बनावें' तो कितना अच्छा लाभ मिले ? आपश्री कृपाकर उनके बारेमें छोटीसी पुस्तिका प्रकाशित करें ।

पू. गुरुदेवनें भावीकों की विनंति को मानकर, मेरे पर अनुग्रह करके वह कार्य करने को कहा, तब मैंने 'सूरीश्वर और सम्राट' ग्रंथ सामने रखकर अल्पमति अनुसार वह ग्रंथ लिखकर विद्वद्जन समक्ष एक मूर्ख मनुष्य बालीश चेष्टा करें ऐसी क्रिया की है, सो मेरे इस कार्यको मुज्ञजन खीरनीर न्याय से सार ग्रहण करें । और दोषका मुझे ब्यान करावें ऐसी नम्र प्रार्थना कर मेरी कलम को आराम देता हूँ ।



सौदम्यं चैव विदुषां मुखराणि ५८ तेषां चैव  
अविदुषां मुखराणि ५९ तेषां चैव

सिद्धिदायक श्री सुविधा

[illegible]

पुस्तकालय अग्रणीय प्रतिभाशाली संस्कृतज्ञ डॉ. लोचन शर्मा  
आज का प्रतिभाशाली प्रतिभाशाली सर्वज्ञ ज्ञानवान अग्रणीय  
श्रीमान् हेमचन्द्र शर्मा १९११-१९८०

一、二、三、四、五、六、七、八、九、十、十一、十二、十三、十四、十五、十六、十七、十八、十九、二十、二十一、二十二、二十三、二十四、二十五、二十六、二十七、二十八、二十九、三十、三十一、三十二、三十三、三十四、三十五、三十六、三十七、三十八、三十九、四十、四十一、四十二、四十三、四十四、四十五、四十六、四十七、四十八、四十九、五十、五十一、五十二、五十三、五十四、五十五、五十六、五十七、五十八、五十九、六十、六十一、六十二、六十三、六十四、六十五、六十六、六十七、六十八、六十九、七十、七十一、七十二、七十三、七十四、七十五、七十六、七十七、七十八、七十九、八十、八十一、八十二、八十三、八十四、八十五、八十六、八十七、八十八、八十九、九十、九十一、九十二、九十三、九十四、九十五、九十六、九十七、九十八、九十九、一百。



# મોગલ સમ્રાટ અકબર બાદશાહ પ્રતિબોધક



શ્રી જૈન શાસન સમ્રાટ શ્રી હીરસૂરીશ્વજી મહારાજ સાહેબ

અન્ન સં ૨૦૩ પાનપૂ અનુભવ દીક્ષા સં ૧૯૬૬ પાટણ અનુભવ

# श्री हीरसूरीश्वरस्तुत्यष्टकम्

श्रीमद् विजय भुवनतिलकसूरीश्वर पट्टधरभद्रंकरसूरि-  
रचितम्

ॐ

युगप्रधानःस्वपरागमज्ञः, कुशाग्रमेधाजितदेवसूरिः ।

जगद्गुरुर्जङ्गमकल्पशाखी, तन्याच्छिवं वो मुनिहीरसूरिः ॥१॥

यशःशशीवाखिल दिक् प्रगामि, कलङ्कराहित्ययुतं तु चित्रम् ।

सच्चक्रबाढप्रमदैकहेतुः, श्रीहीरसूरिर्मनुजान् पुनातु ॥२॥

मध्येसभं भाति यदीयवाणी, पानीयवत्कर्ममलं हरन्ती ।

औदात्यगाम्भीर्यमयी सुचार्वी, माधुर्यधुर्या शुचितां वहन्ती ॥३॥

समागतान्वद्दिग्गजान् सुसज्जान्, वादस्थले सिंहइवातिगर्जन् ।

श्रीहीरसूरिर्जिनशासनस्य, पुष्फोर जित्वा विजयध्वजं यः ॥४॥

तपः प्रभावः प्रथितोऽतिशायी, प्रबोधयन् श्रीमदकब्बरादीन् ।

नृपाननेकान् यवनेषु मुख्यान् व्यापत्रिलोभ्यां गुरुहीरसूरेः ॥५॥

श्रीशान्तिचन्द्रप्रमुखः स्वशिष्यैः, विद्याश्रतप्तः समुपेयिवद्भिः ।

वज्रीव देवैः समुपास्यमानः, श्रीहीरसूरिदिशतात्सुखं नः ॥६॥

स्याद्वादसिद्धान्तमबाध्यमेनं, प्रमाणयन् युक्तिछटाप्रयुक्तम् ।

समन्वयन् भिन्नमतं स्वदृष्टया, श्रीहीरसूरिर्जंबतात् सुखेन ॥७॥

चारित्र्यमुख्याय विचक्षणाय, जिनेशसिद्धान्तनिस्नपकाय ।

लोकोपकारंकरताय तुभ्यं, श्रीहीरसूरिप्रभवे नमः स्तात् ॥८॥

श्री लब्धिसूरी कमलाकराभे, सत्पद्मरूपो भुवनाख्यशिष्यः ।

जातो हि तस्य भ्रमरोपमेण, भद्रङ्कुरेणाष्टकमाशु दृग्धम् ॥९॥



पू. आ. विजयानन्दसूरि : 卐 पू. आ. विजयकमलसूरि :

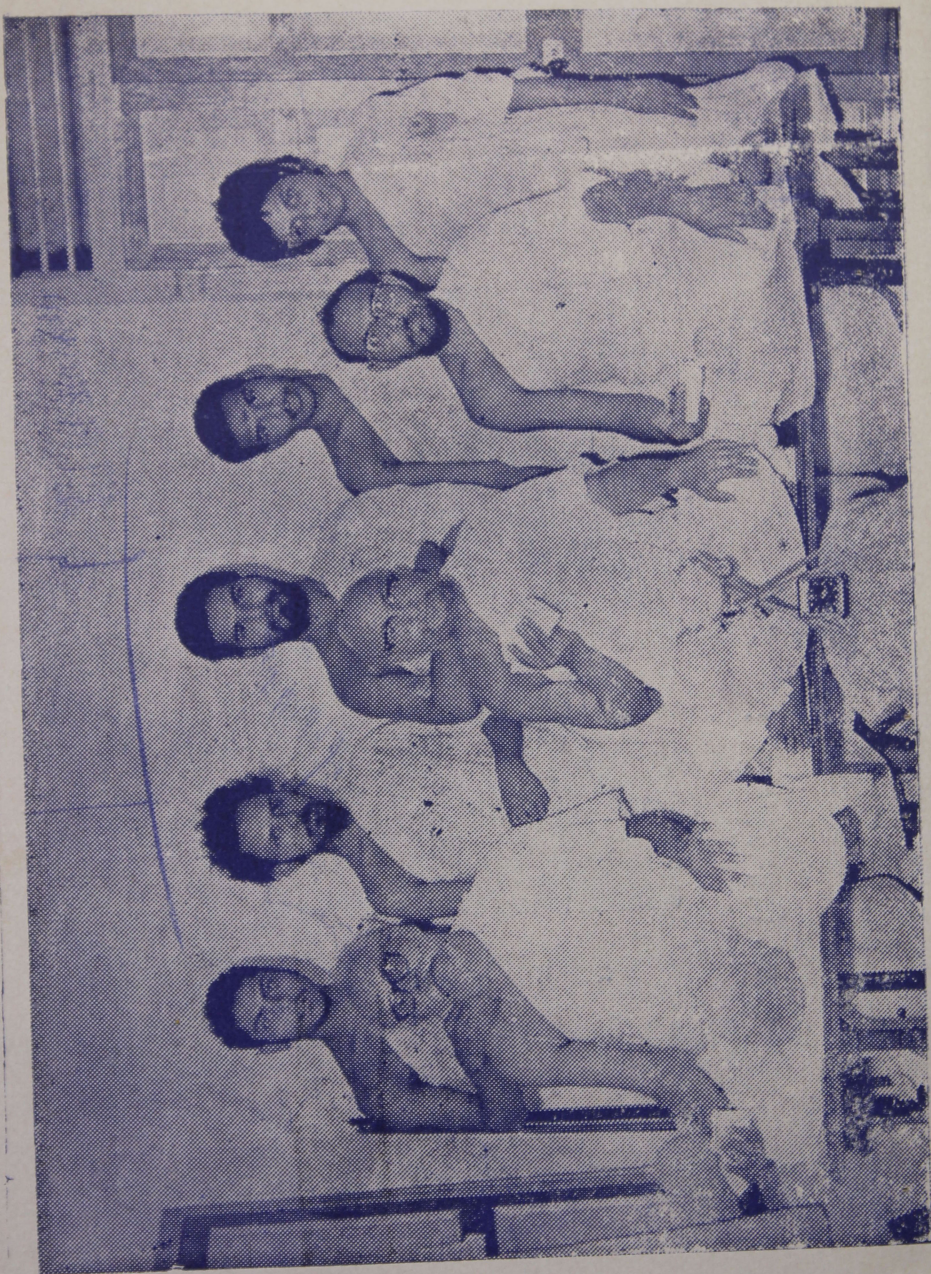


गुरु भ्यो नमः

गुरु भ्यो नमः

आ. विजय भुवनतिलकसूरि 卐 आ. विजय लक्ष्मिसूरि 卐 आ. विजय भद्रकसूरि





## मद्रास शहर में हुई शासन प्रभावना की झांकी

इस चातुर्मास में पूज्य पाद आचार्य देव श्री विजय भुवनतिलक सूरेश्वरजी महाराज की आज्ञा से उनके प्रभावक पट्टधर पूज्यपाद आचार्य विजय भद्रंकर सूरेश्वरजी म.सा. अपने शिष्य परिवार मुनि अरुणप्रभ वि., मुनि पुण्य वि., मुनि वारिसेण वि., मुनि वीरसेन वि., मुनि महासेन वि., मुनि विनयसेन वि., मुनि वज्रसेन वि. आदि ठाणाका संघ को योग प्राप्त हुआ ।

### प्रभावना व संघ पूजा :—

पू. आचार्यश्रीने दक्षिणमें—महाराष्ट्रमें ६ चातुर्मास और आन्ध्रप्रदेशमें ३ चातुर्मास करके अपनी प्रभावक रोचकवाणीके प्रभावसे विविध नगरों में जैसेके प्रभु-प्रतिष्ठा :—शिवनी, सोलापूर, येवला, सिरुगुप्पा । उपधान तप :—नागपूर, हैद्राबाद । उद्यापन :—सिकन्दराबाद, (२) सोरापूर । श्रीपाल (छःरी) संघ :—सोलापूर से कुलपाकजी (२५० मेल) । ज्ञान भंडार :—सोलापूर, यादगीरी । शांतिस्मात्र पूजा :—नागपूर, येवला, सोलापूर, सिकंदराबाद, हैद्राबाद, अदोनी, कर्नूल, मुंबई (दादर) । सिद्धचक्रमहापूजन :—बालापूर, हिंगनघाट, जलगांव, बिजापुर, कुलपाकतीर्थ, सिकन्दराबाद, आदोनी, यादगीरी, सोरापूर ।

जिन मंदिर के शिला स्थापन—छात मुहूर्त :—सिकन्दराबाद, कर्नूल ।

अट्टार्ई-पंचकल्याणक-रत्नत्रयी उत्सवें :—शहापूर, अंतरिक्षजी, येवला,



हिंगनघाट, कर्जत, बाशी, कुल्पाक, सिकन्द्राबाद, कर्नूल, करमाला, रायचुर, सिरुगुप्पा, कडप्पा, पाचोरा। धर्मशाला व उपाश्रय :— सोलापूर, कर्नूल. आदि स्थानों में शासन प्रभावना के कार्य करते-करते अपने विशाल परिवार सह मद्रास के उपनगरों में जिनेन्द्रदेवकी अमृतवाणी का पान कराते हुए सैदापेट, मांबलम में पधारे, तब सुश्रावकों ने संघ पूजा का लाभ लिया, स्थले स्थले बँड-वाजों साथ संघ द्वारा भव्य स्वागत होते रहे।

### शहर में चातुर्मासार्थ प्रवेश :—

संघ, जिनके स्वागत की तैयारी के लिये उत्सुक था, उन गुरुदेव का आसाढ सुब २ के दिन मंगल मुहूर्त के साथ शहर में भव्य प्रवेश हुआ। संघ के भाई-बहिन विभिन्न प्रकार की पोशाक परिधान कर हर्ष के सागर में तल्लीन बनके सुलै की तरफ उनके भव्य दर्शनार्थ जा रहे थे। सुलै से स्वागत-यात्रा बँड-बाजो, वाजित्रों के साथ, देव-गुरु की स्तुति और जैन-शासन की जय-जयकार के गूँजते नारों के साथ शुरु हुई। जब गुरुदेव एलिफेंट गेट के पास आये, तब मद्रास संघ उनके सन्मुख सामैया के साथ आये। सामैया में प्रथम निशान डंका, शासन ध्वज लेकर चलते भाई लोग गजराज, आर. पि. बँड, श्री चन्द्रप्रभु महिला मंडल, श्री पार्श्व जिन महिला मंडल, श्री जिनदत्तसूरि जैन मंडल, मित्र मंडल, युवक मण्डल, बाल मण्डल, श्री जैन मिशन धार्मिक पाठशाला, श्री जैन मिशन संगीत मंडली, श्री पार्श्व जिन युवक मण्डल, अपनी-२ सुंदर सजाई हुई बेल गाडियों, ट्रकों में दांडियारास, और नृत्य आदि करते-२ गुरु गीत गाते-२ बातावरण को भक्ति से (मुखरिते) गूँजा रहे थे। इसके पीछे श्री चन्द्रप्रभु जैन मण्डल का बँड बज रहा था। उनके पीछे आचार्य आदि मुनि मण्डल और विशाल जन-समूह बाद में आर्यागण और संकडो श्राविकाएँ

मंगलगीत गा रही थी। बीच-बीच में गहुँली आदि कार्य से गुरु को बधाया जा रहा था।

स्वागत यात्रा एलिफेंट गेट स्ट्रीट, विनायक मुदली स्ट्रीट, आदियप्पा नायक स्ट्रीट, गोविंदप्पा नायक स्ट्रीट, चाईना बाजार, मिन्ट स्ट्रीट से होकर जुनामंदिर में दर्शन कर श्री चंद्रप्रभु नयामंदिर में दर्शन कर उपाश्रय में सभा के रूप में परिवर्तित हुई और गुरुदेव ने मंगल देशना सुनाई। बाद में बाहरसे आये हुए मेहमानों की संघ ने भक्ति की। दोपहर में पंच कल्याणक पूजा पढाई गयी।

**सूत्र तथा चरित्र का मंगल आरम्भ:—**

गुरुदेव के प्रतिदिन प्रवचन ओर रविवारों के दिन जाहिर प्रवचन चलते थे। श्री संघ की मंगल प्रार्थना से गुरुदेव ने आषाढ़ वद २ से प्रवचन में श्राद्ध प्रतिक्रमण सूत्र ओर वस्तुपालचरित्रका वांचन आरंभ किया।

**सामुहिक तपश्चर्या :—**

पूज्यश्रीके प्रभाविक प्रवचनों से लोगों में धार्मिक भावना ओर तपश्चर्या करने की इच्छा प्रकट हुई, इसलिये नवकार मंत्र के तपका प्रारंभ हुआ। जिसमें लगभग ५०० तपस्वी लोगों ने भाग लिया। श्री संघ द्वारा नौ दिन एकासना की भक्ति हुई। फिर गौतमस्वामी के छट्ठ में २५० भावुकों ने लाभ लिया। इसके बाद श्री पर्युषण पर्वमें ३१, ३०, १६, ११, अठ्ठाई १००, क्षीरसमुद्र आदि भारि संख्या में तपश्चर्या हुई, (काफि मात्रा में हुऐ) और चोसठ प्रहरी पौषघ ५० संख्या में हुऐ थे। ८०० तपस्वीयों का समुहमें पारणा हुआ था। फिर श्री शंत्रजय मोदक तपमें २२५ साधकों ने, श्री अक्षयनिधी तपमें

१५० भावुकोंने ओर वर्धमान तप के पाया में ४८ तपस्वियों ने लाभ लिया। उनकी भक्ति निमित्त पारणा, ओर मृत्यवान प्रभावनाएँ हुई।  
मंगल उत्सवें :—

पूज्य गुरुदेव श्री लब्धिसूरीश्वरजीकी नौवीं स्वर्गारोहणतिथि निमित्त श्री संघ द्वारा शांतिस्नात्र अष्टाहिकामहोत्सव, जुलुस गुणानुवाद सभा आदि हुई, ओर श्री पर्युषण पर्व में भी उत्सवों की मंगल योजना हुई. देवद्रव्य, ज्ञानद्रव्यादिकी भव्य आमदानी हुई. पर्युषण के बाद मोगल सम्राट अकबर बादशाह प्रतिबोधक श्री हीरसूरीश्वरजी महाराज की ३७३ वीं स्वर्गाराहणतिथि मनाई गई। बाद में श्री जैन नया मंदिर में शांति स्नात्र अठ्ठाई महोत्सव ओर श्री गुजरातीवाडी में सिद्धचक्र पूजन ओर श्री जुनामदिर में शांतिस्नात्र, सिद्धचक्र पूजन सह अठ्ठाई महोत्सव मनाया गया. ओर भवोभवके पुदगल बोसराने की भव्य क्रिया हुई, का. सु. १५ को दादावाडी में श्री सिद्धगिरि यात्रा निमित्त रथयात्रा, चैत्यवंदन, खमासमणां, नव्वाणुंप्रकारीपूजा, मद्रास संघ की नवकारशी आदि हुआ था। पू. गुरुदेव की मंगलमय देशना व प्रेरणा से उपधान तप, पांच छोडका उद्यापन जैसे महान अनुष्ठान भी होने वाले है। मद्रास श्री संघ प्रार्थना करते हैं कि पू. गुरुदेव के करकमलों से शासन प्रभावना के महान कार्य ओर भी होते रहे।

निवेदक

श्री मद्रास जैन संघ

“ लब्धिवाणी ”

शृंगार यही अंगार है। विषयोंकी मजा यही सजा है।  
स्नेहीयों का व्हाल यहीं आत्मा के बुरे हाल है। और  
भयंकर काल है।

# 卐 सोलवीं शताब्दीके जगद्गुरु हीरसूरीश्वरजी 卐

## जन्मकाल :

इस परिवर्तनशील संसार में प्रबल पुण्यराशिके साथ जीव मनुष्य जीवन में आते हैं, और अपना देव-दुर्लभ अमूल्य मानवभवको विषय कषायके कीड़े बनके व्यर्थ गमा देते हैं ; याने प्राप्ति की जीत पराजीतमें परिवर्तन कर देते हैं। किंतु उसका ही भव सफल होता है जो महापुरुषके सत्संग को प्राप्त कर स्वकल्याण के साथ अन्य जीवों को उर्ध्वगमन कराने के लिये दिवादांडी रूप बनते हैं।

गुजरात-बनासकांठा जिले में धर्म-धन और बाह्य-धन से युक्त पालणपुर नामका बड़ा शहर था। उस नगर में सदा धर्म कार्य में आसक्त कूराशा श्रेष्ठी बसते थे। उनकी शीलादि गुण वैभव सम्पन्न नाथीबाई नामक धर्म-प्रिया थी। सांसारिक सुखका उपभोग करते हुये आपको चार पुत्र और तीन लड़कियाँ हुई थी। उनके नाम थे संघजी, सूरजी, श्रीपाल एवं हीरजी। और रंभा, राणी एवं विमला। हीरजीका जन्म वि. सं. १५८३ मार्गशिर्ष शुक्ल नवमी सोमवार के दिन हुआ था। 'पुत्रका लक्षण पालणेमें' इस कहावत के अनुसार छोटे लड़के हीरजी का तेज-प्रताप-देहलालित्य भव्य था एवं आकर्षित था। इससे सब लोग उनको बड़े प्रेम से बुलाते थे और खीलाते थे। हीरजी लड़कपन से धर्म प्रति आदरवाले थे। पूर्वका क्षयोपशम से ज्ञानमें भी प्रवीण थे। व्यवहारिक ज्ञानाभ्यास के साथ धर्म गुरुवर के पास जा कर धर्म का तत्त्वज्ञान प्रसन्न चित्त से सुनते थे। जिससे उसने अपना अंतःकरण वैराग्य रंग से रङ्गित बना दिया था।

## दीक्षा और आचार्यपद :

जब हीरजी शिशुवयको विदा कर तेरह साल की नवीन विकसित युवावय में प्रवेश कर रहे थे। तब आपके माता-पिता नश्वर देह को त्यागकर स्वर्ग प्रति प्रयाण कर गये। वह वज्रघात सदृश वृत्तांत से आपका अंतर वेदनासे बहुत आक्रांत हो गया। मगर आपने जिन-वाणी का सुधा-स्वाद गुरुमुखसे बार-बार लुंटे थे। इस से आर्त्तध्यान वश न होकर आपके ज्वलंत वैराग्य में असार संसार का निमित्त दोगुणा बढ़ गये। इस दुःख को दूर करने के लिये आपको अपनी बड़ी बहिन विमला अपने समुराल पाटण ले गई। मगर आपका आत्म-पंखी अब संसार-पिंजर को छोड़ कर मुक्त-विहारी बनने के लिये किसी रास्ते को ढंढ रहा था।

इतने में आपके पुण्यबलसे आकर्षित न हुये हो ऐसे परमोपकारी सकल शास्त्रविद् आचार्यदेव विजयदानसूरीश्वरजी महाराज का सपरिवार पाटण शहर में शुभागमन हुआ। मेघका आगमन से प्रजा आनन्दविभोर बन जाती है। ऐसे सूरीश्वरका पुनित पाद-कमल से जनता के हृदय में हर्ष की लहर छा गई। पूज्यश्री के हृदयंगम और वेधक देशना प्रवाह से भव्य जनों की पाप-राशि सफा हो गई, और मिथ्यात्व-अंधेरा दूर हट जाने से सम्यकत्व का सहस्र रश्मि दिप्तीमान हुआ। आपके सद्बोधसे हजारों जीवोंने देशविरति और सम्यकत्व आदि प्रतिज्ञा लेकर जीवन को निर्मल बनाया।

इसमें युवा हीरजीने भी गुरुवर के पास कर्म-विदारिणी भव-नौका सदृश संयम देने की प्रार्थना की। तब पूज्यश्रीने

आपकी पवित्र भावना को वैराग्य रूप नीरसे नव पल्लवित बना दी। और 'शुभस्य शीघ्रम्' व कहावत को सार्थक करने की प्रबल प्रेरणा भी दी।

हीरजीनें गृह पर आकर बड़ी बहिन को विनम्र होकर अपनी संसार त्याग की भिष्म प्रतिज्ञा जाहिर की। वह इलेक्ट्रीक करण्ट जैसे वचन को सुनकर बहिन मोहवश चेतन्यशून्य हो गई। मगर आकठ वीर-वाणी का अमीपान किये थे। इसलिये हीरजी को महाभिनिष्क्रमण की न अनुमति दी, एवं संसार में ठहरनेका भी न कहा। और तीसरा राह मौनका आलम्बन लिया। हीरजी बड़े चतुर थे। वे समज गये। 'न निषिद्धं अनुमतं' व न्याय से उसने आचार्यश्री के पास आकर प्रव्रज्याका मुहूर्त निकाला। और वि. सं. १५९६ का. सु. २ सोमवार के शुभ दिन तेरह सालकी उम्रमें हीरजी बड़ी धूमधामसे पुनित प्रव्रज्या के पथिक बने। तब से कुमार हीरजी मुनि हीरहर्ष बने। स्वार्थी संसार का अंचला त्यागकर मुक्तिपथके विहारी-सच्चे साधु बने। पू आचार्य देवने नूतन मुनि पर अनुग्रह करके ग्रहण और आसेवन रूप शिक्षा का अनुदान दिया।

नूतन मुनिश्री नित नूतन अभ्यास और गुरु विनय-सेवा दोनों को अपना जीवन मुद्रालेख बनाकर संयमपर्याय में दिन व दिन प्रगति करने लगे।

गुरु महाराजने हीरहर्षकी विनम्रता सह शास्त्राध्ययन में भारी प्रज्ञा देखकर उनको न्याय-तर्क आदि गहन शास्त्रों को पढ़ने

के लिये विद्याधाम दक्षिण देश के देवगिरि में मुनि धर्मसागर और मुनि राजविमल के साथ भेंजे ।

वहाँ से तनिक समय में शास्त्रावगहन करके त्रिपुटी मुनि गुरुवरके पास नाडलाई गांव में आये । तब हीरहर्षको पूज्य श्रीने वि. सं. १६०७ में गणि-पण्डितपद से विभूषित किया । इतना ही नहीं बल्कि वि. सं. १६०८ में माघ सुद ५ को नाडलाई में ही मुनि धर्मसागर और मुनि राजविमल के साथ मुनि हीरहर्ष गणि को भी उपाध्याय-पद का दान दिया । उपाध्यायजी हीरहर्ष के चारों ओर से चरित्र प्रभा की कीर्ति, ज्ञानका प्रकृष्ट वैभव, विद्वान शिष्य सम्पत्ति और शासन की रक्षा एवं प्रभावना की बड़ी तमन्ना इत्यादि गुण-मौक्तिकों से प्रसन्न होकर पू. आचार्य भगवतने सिरोही नगर में वि. सं. १६१० पोष सुद पंचमी के पवित्र दिन बादशाही ठाठ से पंच परमेष्ठी के तृतीयपद आचार्यपद पर हीरहर्ष उपाध्याय की प्रतिष्ठा की । तबसे सारा देश में आचार्य श्री विजय हीर सूरिजी नामसे मशहूर बने ।

कालराजा दिन-रात रूप दंडसे मनुष्य-आयुष्य का टुकड़ा ले जाता है । माँ कहती हैं, 'मेरा लडका बड़ा हुआ । मगर आयुष्यमें तो कम हुआ ।' ऐसे विजयदानसूरि महाराजा आयुष्य पूर्ण होनेसे ससमाधि वि. सं. १६२२ वैशाख सुद १२ को बडावली में स्वर्गधाम सिधायें । तब सारे गच्छका भार विजय हीर सूरिश्वरजी महाराज के शिरताज पर आ गया । श्री संघने पूज्य श्री को गच्छ नायक-भट्टारक की पदवी का बहुमानकर अपना कर्तव्य का सच्चा पालन किया ।

## विपत्ति की वर्षा :—

सोने की ही कसोटी होती है, पीतल की नहीं ।

एक बार विजय हीरसूरीश्वरजी महाराज अपने परिवार के साथ खंभात नगरमें विराजीत थे । तब रत्नपाल नामक एक श्रावक आया । उसने कहा, गुरुवर ! मेरा लडका रामजी तीन सालका है । वह बहुत बीमार रहता है । आपके प्रभाव से जो लडका अच्छा हो जायगा, तब आपका शिष्य बनादुंगा । अचानक आपके प्रभावसे रामजी दिन व दिन अच्छे होने लगे । और इस बात को आठ साल हो गये । पू. हीर सूरीश्वरजी विहार करते करते पुनः खंभात पधारे । पूज्यश्रीने रत्नपाल को अपना वचन पालन करने को कहा । तब रत्नपाल सूरीश्वरजी को कहने लगा, आपको मैंने ऐसा कब कहा था, ? व कहकर बदल गया । इतना हि नहीं बल्कि उसने अपने रिस्तेदारों को बुलाया और कहा, आचार्य हीरसूरीश्वरजी मेरे लडके को उठा ले जाते हैं । तब सुबा सिताबखाँ को कहा । सुबा सिताबखाँने हीर सूरि को जेलमें डालने के लिये आज्ञा दे दी ।

इस समय सारे गुजरातमें नादीरशाही चलती थी । न्याय और अन्यायको देखते ही नहीं थे । जिससे प्रजा अत्यंत त्राहित बन गई थी ।

हीर सूरिजी को ये समाचार मिल गया । इसलिए उन्हें २३ दिन तक गुप्त स्थानमें रहना पडा ।

ओर भी बि. सं. १६२० सालमें बोरसद गाँवमें घटना घटी कि, जगमाल ऋषिने पू. हीरसूरीश्वरजी महाराज के पास



आकर कहा कि, मेरे गुरुजी, मेरी पुस्तकें नहीं देते हैं। सूरिजीने सहज भावसे कहा, आपने कोई गुहा किया होगा। इसलिये नहीं देते होंगे। वह यह सुनके जगमालजीको संतोष न हुआ। बल्कि हीरसूरिजी पर क्रोधित होकर वहाँ से पेटलाद गांव गये। और वहाँ के हाकिम को हीरसूरिके विरुद्ध बड़ा दोष लगाकर उनको पकड़ने के लिये दो-तीन बार सिपाहिओं को भेजा। मगर सूरिजी मिले नहीं। इस उपद्रवसे बचानेके लिये श्रावकोने घूस देकर हीरसूरिजी महाराज को सांत्वन दिया।

वि. सं. १६३४ में विजय हीरसूरिभरजी महाराजाका कुणगेर (अमदावाद) में चातुर्मास था। तब उस समय उदयप्रभ सूरिने आचार्य श्री को कहलाया। आप, वहाँ सोमसुंदर सूरि चतुर्मास बीराजे हैं, उनके साथ क्षमापना कर दो। हीर सूरिजीने कहा, मेरे गुरुजीने खमत खामणां नहीं किया है, मैं कैसे करूंगा। इस असाधारण निमित्त से उदयप्रभसूरि बड़े इर्षान्वित बन गये। और पाटण जाकर वहाँ का सुबेदार कलाखांको उल्टा-सुल्टा समझा कर, हीर सूरिजी को कैद करने के लिये एक सौ सिपाहिओं को भेजा। मगर वडाबली संघने तीन महिना तक सूरिवर को गुप्त रक्खा और बचा लिया।

विजय हीर सूरिजी महाराज बिहार करते वि. सं. १६३६ में अमदाबाद पधारे। तब हाकेम शहाबखाने आकर कहा। क्या आप बर्षा को रोकते हो? इससे आपको क्या लाभ है? बगलत समाचार सुनकर सूरिजीने कहा, भाग्यशाली, हम तो चीटीयांसे लेकर कुंजर तक दया करनेवाले हैं। याने सारे जगत

के प्राणियों के साथ मंत्रीभाव करनेवाले है। और समस्त जीव लोक सुख-शान्ति आबादी के साथ धर्ममय जीवन व्यतीत कर कल्याणपथ के यात्री बनें ऐसी प्रार्थना करते हैं।

ऐसी बात चल रही थी इसमें इधर के सुप्रसिद्ध कुंवरजी भाई श्रावक वंदनार्थ आये। उसने जैन साधु कैसी मर्यादा से पवित्र जीवन बिताते हैं। उनका परिचय दिया। वह यह सुनकर हाकेम बड़ा खुश हो गया। और उपाश्रय के बाहर आकर दीन-दुःखी को दान दिया।

इतनेमें एक पुलिसपार्टी वहाँ आई। और समाधान सुनकर वे कुंवरजी श्रावक के साथ चर्चा करने लगे। इसमें कुछ मामला तंग हो गया। पार्टीने कोटवालके पास जाकर उनको Vill Power चढाया। कोटवालने हीरसूरिको कैद करने के लिए हुकम के साथ पुनः पार्टी भेज दी। मगर पहिले मालुम हो जानेसे वहाँसे हीरसूरिजी नग्न देहे भगे। और वहाँ देवजी लौंकाने आश्रयदान दिया। कितने दिनों बाद हल-चल मिट गई। और हीरसूरि महाराज शान्ति से गांव-नगर विहार करने लगे।

“ लब्धिवाणी ”

सरकार का वारंट किसी भी निमित्त निकालकर पीछे  
हटा सकोगे। मगर मृत्यु का वारंट पीछे  
हटा नहीं सकोगे।

## मुगलबादशाह का आमन्त्रण :—

‘अकबर की सभा पांच विभागों में विभक्त थी। इसमें पहिले लाइनमें १६ वाँ नंबर में हरजी सूर है।’ ऐसी सूची आइने अकबरी नामक ग्रंथमें है। वो ही अपने चरित्र नायक आचार्य विजय हीर सूरेश्वरजी महाराज।

कौनसा निमित्तसे आचार्यदेव की अकबर के साथ मुलाकात हुई इस प्रसङ्ग को जानने के लिये वाचक को भी बड़ी तमन्ना हो गई होगी। अतःअब जानकारी दे देता हूँ।

दिल्ही के मेइन रोड पर भारी हल-चल मचगई है। बेंड और गहनाई का मधुर स्वरोंदो गगन को भेद कर रहे है। जैन शासन की जय, महातपस्वी चंपाबाई की जय, ऐसा जय-जय का बुलंद नादोंने दिशाओं को शब्दमय बना दिया है। महा तपस्वी का भव्य जुलुस सडक पर से जा रहा है।

झरुखामें बैठे हुवे सारे हिंदुस्तान के बादशाह अकबर व जुलुस को देखकर पास में खडे हुए सेवक को पूछने लगा, वह कौन सा जुलुस है। तब सेवक ने कहा, राजन् ! चंपाबाई श्रावीकानें छःमहिना का उपवास (रोजा) किया है। वह अपने जैसा रोजा—उपवास करते है, ऐसा नहीं, किंतु दिनरात खाना नहीं और सूर्योदय के बाद आवश्यकता हो तो गर्मपाणी पीते है। वह सूर्यास्त के बाद पाणी भी नहीं लेते है। ऐसी महान उपवास की तपश्चर्या श्रावीकानें की है।

अकबर वह सुनकर राहु से ग्रस्त सूर्य कैसा ठंडा हो जाता है ऐसा ठंडा हो गये। और आश्चर्य से बोलने लगा, ऐसा क्या

हो सकता है ? हम एक दिन रोजा करते हैं तो थक जाते हैं, और रात को खाना खा लेते हैं ।

बादशाहनें दो आदमी मंगल चौधरी और कमरुखां को चंपाबाई के पास भेजा और कहलाया । आप, ऐसी महान् तपश्चर्या कौन से प्रभाव से कर सकते हो । तब चंपाबाईनें कहा, मेरा तप देव-गुरुकी कृपा से चल रहा है । राग-द्वेष आदि १८ दोषों से रहित वीतराग देव है । और कंचन-कामिनी के त्यागी-पाद विहारी-माधुकरी वृत्ति से जीवन निर्वाह करनेवाले गुरु है । ऐसा त्यागी मेरा गुरुदेव विजय हीरसूरीश्वरजी महाराज अब गुजरात के गंधार बंदर में बीराजते हैं । उनके प्रभाव से मेरी महान् तपश्चर्या चल रही है ।

बादशाहनें सेवकों द्वारा चंपाबाई का वृत्तांत सुनकर बड़ा आनन्द हुआ । और विजय हीरसूरिजी को मिलने की बड़ी उत्कंठा हुई । इतना ही नहीं बल्कि चंपाबाई को अपने महलमें बुलाकर सम्मान के साथ सोनेके चूड़ा की बहरामणी दी । और अपना शाही बाजे भेजकर जुलुस की शोभा द्विगुणी बढ़ाई ।

कोक पक्षी जैसा सूर्य को चाहते हैं ऐसे अकबरको हीरसूरि को मिलने की बड़ी तमन्ना हुई । और इधर बुलाने के लिये आपनें सोचा, एतमादखां गुजरात में बहोत रहे हैं । वो जरूर पहचानतें होंगे । उसने एतमादखां को बुलाया । और हीरसूरिजी का परिचय पूछा । तब एतमादखांनें कहा, वो तो बड़ा धर्मात्मा-फकीर है—दूसरा खुदा है । पेंदल चलते हैं, सोना

और सुंदरी से दूर रहते हैं। स्वयं केश लोंछन करते हैं। माधुकरी से जीवन-वृत्ति चलाते हैं इत्यादि कई गुणों का गुणगान करके बहुत प्रशंसा की। तब अकबरने अपना हस्ताक्षर से विनंति पत्र और दूसरा आग्रा जैनसंघ का पत्र, इन दोनों पत्र के साथ माणुकल्याण और थानासिंहरामजीको अहमदाबाद गुजरात के अपने सुबा शाहबखां के पास भेजा। दोनों सेवकने अचिरत प्रयाण कर अहमदाबाद आकर शाहबखां को दोनों पत्र दे दिया।

शाहबखांने विनम्र होकर पत्र को शिर पर चढायें। और पत्र पढने लगे। इसमें क्या लिखा होगा व सुनने को वाचक भी बड़े उत्साहित बन गये होंगे।

“आचार्य हीरसूरि को हाथी, घोड़े, पालखी, हीरा, मोती, इत्यादि किसी भी साज चाहिये वो देकर सम्मान के साथ दिल्ली की ओर प्रस्थान करावें।”

शाहबखां पढकर बहुत आनन्दित हुये। और मनमें शर्म भी आई, कि मैंने उस महापुरुष का बड़ा अपराध किया है। इसलिए मैं अपना मुँख उस महात्मा को कैसे दिखाऊं। पुनः सोचा, वो तो बड़े करुणा के अवतार है। सबके उपर अनुग्रह की छांट डालनेवाले है। ऐसे अपना मनको उत्साहित करके अहमदाबाद के अग्रणी श्रावकों को बुलाया। और दोनों पत्र दिया। पत्र को पढकर सब हर्ष और खेद के हिंघोले हींघने लगे। बादशाह के आमंत्रण से आनन्द हुआ। और खेद भी इसलिये हुआ कि, बादशाह बुलाकर क्या करेंगे? किसी विरोधीने बादशाह को क्या-क्या कहा होगा? क्या मालुम? स्लेच्छ राजबी है।

सब ने सोचा, बाबशाह का पत्र है । इसलिये हीसूरिजी को वाकेफ करना ही चाहिये । और खंभात जैन संघ को पत्र से इतला देकर गंधार बुलाना । और अपना संघ, खंभात संघ, गंधार के श्रावकें सब मिलकर विचार विनिमय करेंगे ।

दो पत्र को लेकर अहमदाबाद संघ, खंभात संघनें सूरिवर की निश्चा में आकर दोनों पत्र गुरुकरांबुज में दे दिया । इस तरह तीनों संघों की मिटींग हुई । गुरुवरको जाने देगा कि नहिं इस पर गंभीर विचार विनिमय हुआ । अंत में सब एक राय पर आये कि, सूरिवर जैसा फरमावें ऐसा करना ।

तीनों संघ के अग्रणी सूरिवर के पास आये, पूज्यश्रीनें रुपेरी घंटडी जैसा मधुर स्वर से सबको पूर्व महर्षिओंनें राजाओं के पास जाकर कैसी शासन प्रभावना कि उनका परिचय दिया । यह सुनकर सब की रोमराजी विकस्वर हो गई । और एक ही आवाज बोलने लगे, पूज्यश्री को जरूर बादशाह को पास जाना ही चाहिये ।

“ लब्धिवानी ”

लक्कड जैसे अक्कड, मानव की जन्म मरण की  
पक्कड मजबूत बन जाती है ।

गंधार से प्रस्थान :—

सूरिजीने मांगशिष कृष्ण सप्तमी को प्रस्थान करनेका मंगल निर्णय जाहिर किया। मुक्ति की ओर जाने फौज न चली हो ऐसी साधु मंडली आचार्यश्री के साथ विहार करने लगी। तब सारा संघ के एक नयन में गुरु-विरहका अश्रु और दुसरा नयनमें बादशाह को प्रतिबोध देंगे उस आनन्द का अश्रु अविरत बहने लगे। और विदा देने साथमें चला। पूज्यश्रीने शहर के बाहर मंगलिक सुना कर धर्म-ध्यान में स्थिर रहनेका धर्मोपदेश दिया। जब तक सूरिजी नयनपथमें दिखाये तब तक गुरु-दर्शनामृत पान करके संघ खेदित हृदय वापिस आ गये।

विहार करते हुए सूरिजी बटादरामें पधारे। यहाँ रात्रि को पू. सूरेश्वर को एक देवीनें मोतीओं से वर्धापन की। और मंगलाशिष दिया कि, आप सुखपूर्वक बादशाह के पास पधारें। आपको बड़ा लाभ मिलेगा और शासन प्रभावनामें अभिवृद्धि होगी। इतना कहकर देवी अंतर्धान हो गई। व सुखद समाचार सुनकर सूरिजी के मुख पर आनन्द के चार चाँद उदित हो गये।

वहाँ से सूरि भगवंत अहमदाबाद पधारे। संघ द्वारा किया हुआ भव्य-स्वागत यात्रा में सुबा शाहबखॉ भी आये थे। उसने गुरु-चरण में अपना शिर रखकर पूर्वी किया हुए अपराध की क्षमा याचना मांगी। और बादशाह का भावपूर्ण निमंत्रण को और किसी भी वाहन चाहिये इत्यादि की विनंती की। सूरिजीनें अपने आचारका वर्णन किया। इधर से पत्र लेकर आये हुये दो सेवक भी सूरिजी के साथ चलने लगे।

सूरिजी भगवंत पाटण पधारे, तब विजयसेनसूरि, उपा-  
विमलहर्षगणि संघ के साथ सामैया में पधारे थे । विजयसेन  
सूरि को गुजरात में रखकर सूरिजी आगे विहार करने लगे ।  
उपाध्याय विमल हर्ष गणि ३५ मुनिवर के साथ उग्र विहार करते  
हुए दिल्ली पहिले पधार गये ।

अबुल फजल द्वारा अकबर बादशाह के साथ उपाध्याय का  
मिलन हुआ । आप साधु किस कारण बने ? आपके महान  
तीर्थ कौनसा है ? इत्यादि बहुत प्रश्नों बादशाहनें पूछे ।  
उपाध्यायनें ऐसी तर्क-दृष्टांत के साथ समजौति दी कि बादशाह  
सुनकर आनंद विभोर बन गये । और नमन करके हररोज  
धर्मोपदेश देने जरूर पधारना ऐसी प्रार्थना भी की ।

पू. उपाध्यायने सूरिवर के पास श्रावकों को भेजकर विनंती  
की, कि बादशाह आपके दर्शन और धर्मोपदेश सुनने को चातक  
पंखी की तरह आतुर है । दूसरा कोई कार्य नहीं है । आप  
शान्ति से पधारना और स्वास्थ्य को संभालना ।

पाटण से विहार कर सूरिजी आबू पधारे । तब बीच  
जंगल में सहस्रार्जुन नामक भीलों के सरदार को उपदेश देकर  
मांस नहीं खाने का अभिग्रह कराया ।

वहां से सूरिजी सिरोही पधारे । संघनें सुंदर सामैया  
किया इसमें महाराज सुलतान भी साथ थे । सूरेश्वरकी  
सक्करशी देशनासे महाराजानें शिकार-मांसाहार-मदिरा एवं  
परस्त्रीगमन, इन चारों का नियम लेकर अपने जीवनको  
सफल बनाया ।



जब सूरिवर मेडता पधारे तब राजा सादिमने आपका भव्य एवं प्रभावक स्वागत किया । वहां से आपका ज्येष्ठ सुद १२ के दिन आग्रा में पुनित पदार्पण हुआ । तब संघने ११ मेल से कल्पनातीत अप्रतिम बडा सामेंया किया था । आपके साथ में तब नेयायिक-वैयाकरणचतुर, शतावधानी एवं विविध विषय के प्रकाण्ड मुनिवर ५७ थे ।

### “ लब्धिवाणी ”

महिला ओंकी मधुर वाणी, मीठी स्नेहाल दृष्टि और  
कारमी काययस्ती यह त्रण एक म्यान में रही  
हुई तलवार जैसी पलवारमे अघोगतीमे  
ले जाती है ।

### “ लब्धिवाणी ”

कामी और हरामी आत्माओं को  
आत्मरामी आत्माएँ आंखमे गिरे हुए  
तिनका, जैसा लगता है ऐसा ही दुःखता है

## बादशाह को प्रतिबोध :—

ज्येष्ठ सुद १३ का दिन सारे जैनसंघके इतिहासमें Goldenson जैसा उदित हुवा था।

क्योंकि आज सारा राष्ट्र के सम्राट और सारे जैन संघ के सार्वभौम सूरिजी का सुभग मिलन हुआ था।

सूरिजी अपने विविध विषयोंके निष्णात १२ साधुकी मंडली के साथ अकबर को धर्मोपदेश देने के लिये अबुलफजल के महलमें पधारे। बादशाह कुछ कार्य में व्यस्थ थे। इधर सूरिजीने आग्रह कर दिया। तब बादशाह का आमंत्रण आया।

सूरिजी राजसभाके द्वार पर पधारे तब बादशाहने सिंहासन पर से उठकर निजी तीन पुत्रों के साथ अभिवादन कर नमन किया। सूरिजीने धर्मलाभका मंगल आशीष दिया। सूरिजी के दर्शन से बादशाह के मुखपर हर्षकी लालिमा छा गई। और अपने बैठक तक ले गये।

बादशाह खडे है और सूरिश्वर भी खडे है। अकबरने क्षेमकुशल की पृच्छाकर कहा, आप मेरे पर बहुत कष्ट के पहाड को पार करके आये हो, इसलिये मैं आपका अहसान मानता हूं और कष्ट के लिए क्षमा चाहता हूं। आपको मेरे सुबाने कुछ भी साधन नहीं दिया।

सूरिजीने उत्तरमें कहा, आपकी आज्ञासे मुझे सब कुछ देने को वे तैयार थे। किन्तु हमारा धर्माचार ऐसा है कि कोई भी

वाहन का उपयोग नहीं करना । एक पैसा का भी परिग्रह नहीं रखना । पैदल चलना, माधुकरीसे जीवननिर्वाह करना इत्यादि सुणायें । आपने क्षमा याची, वो आपकी सज्जनता है । इस वार्तालाप में बहुत समय हो गया । और ज्यादा धर्मोपदेश सुनने के लिये अपने कमरेमें ले जाते हैं । तब सूरिजी कमाडके पास रुक गये ।

बादशाहने पूछा, आप क्यों रुक गये ? सूरिजीने कहा, इस गालीचा पर पाँव रखकर हम नहीं आ सकते । क्योंकी हमेशा आचार है कि चलना हो बैठना हो तो अपनी नजरसे देखकर चलना बैठना । जिससे किसी जीवको दुःख न हो और वे मर न जावे । धर्मशास्त्र भी फरमाते हैं, 'दृष्टि पुतं न्यसेत् पादम्'

बादशाहने कहा, हमारे सेवक रोजाना साफ करते हैं तो क्या इसमें चिटियां धुस गई व बोलकर अपने हाथ से एक ओरसे गालीचा का छेडा उठाया । तब बादशाह आश्चर्यके सागरमें बुड गये । और लाखों चिटियाँ देखकर सूरिजीके प्रति श्रद्धा सौ'गुणी और बढ़ गई । अकबरने अपने रेशमी वस्त्रके अंचलसे चिटियाँ दूर करके प्रवेश कराया । और अपनी भुलकी क्षमा मांगी ।

सूरिजीने सच्चे देव, गुरु और धर्मका संक्षेपमें उपदेश दिया । उपदेश सुनकर सूरिजीके पांडित्य और चरित्रका बादशाह के हृदयमें बड़ा आदरभाव हुआ । इतना ही नहीं अपने पास पद्मसुंदर नामक साधुका ग्रंथालय था उन पुस्तकों को ग्रहण करने की प्रार्थना की ।

सूरिजीने मना किया मगर बादशाह के बहुत आग्रह करने पर पुस्तकें लेकर अकबरके मामसे अगरा में पुस्तकालय की स्थापना कर उन पुस्तकों को वहाँ रख दिया। और सूरिजीने कहा, हमको जरूरत होगी तब पुस्तकें मँगवायेंगे। सूरिवरका त्याग देखकर बादशाह के मन पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा और आनंदकी खुशीमें उन्होंने दान दिया।

उस समय पर बादशाहने पूछा, मेरी मीनराशिमें शनैश्चरकी दशा बैठी है। लोग कहते हैं वह दशा बहुत कष्ट देनेवाली है। तो आप ऐसी कृपा करो जिससे यह दशा मीट जाय।

सूरिजीने स्पष्ट शब्दोंमें कहा, मेरा यह विषय नहीं है, मेरा विषय धर्मका है, यह ज्योतिषकी बात है।

बादशाह ने कहा, मेरे को ज्योतिषशास्त्रके साथ संबंध नहीं है, आप ऐसा कोई तावज-मंत्र-यंत्र दो जिससे मुझे इस ग्रह की शान्ति मिले।

सूरिजीने कहा, वो भी हमारा काम नहीं है। आप, सब जीवों पर रहेम नजर कर अभयदान दोंगे तो आपका भला होगा। निसर्गका नियम है कि दूसरों की भलाई करनेवालों को अपनी भलाई होती है। यह उपदेश देकर सूरिजी उपाश्रयमें पधारे।

थोड़े दिन बाद सूरिजी आगरा पधारे। चातुर्मास आगरा में किया। श्रावकोने सोचा, बादशाह सूरिजीके भक्त बने हैं, तो पर्युषणके आठों दिन अमारी की उद्धोषणा हो जाय तो लाभ होगा।

श्रावकोने आकर सूरिजीको विनंती की। सूरिजीने सम्मति दी, और अमीपाल आदि अग्रणी श्रावकोंका डेप्युटेशन बादशाह के पास आया। श्रीफल आदि नजराणा भेट दिया। और साथ में कहने लगे कि आप नामदारको, पू. सूरि भगवंतने धर्मलाभका मंगल आशीष दिया है। आशीर्वाद सुनकर बादशाह के मुख पर प्रसन्नताकी सुखी छा गई, और बोलने लगा, सूरि महाराज कुशल है न ? मेरे योग्य कुछ आज्ञा फरमाई है ?

अमीपालने उत्तर दिया, आचार्यश्री बड़े कुशल है, और आपको अनुरोध किया है कि हमारा पर्युषणपर्व आ रहे है। इसमें कोई जीव किसी मुकजीवकी हिंसा न करे ! आप इस बातकी मुनादि करानेदोंगे तो अनेक मुक जीव आशीर्वाद देंगे, और मुझे बड़ा आनन्द होगा। बादशाहने आज्ञा दे दी, और आगरा में आठों दिन अमारीका ढंढेरा पीटवा दिया. वह साल था वि. सं. १६३९ का।

आप आगरामें चातुर्मास व्यतीतकर शौरीपुर तीर्थ यात्रा करके पुनः आगरा पधारे। प्रतिष्ठा आदि धर्मकार्य कर दिल्ली पधारे। कई बार बादशाह के साथ आपकी मुलाकात हुई।

एक बार सूरिजी अबुलफजल के महलमें धर्मगोष्ठी कर रहे थे। अकस्मात् बादशाह वहाँ आ गये। अबुलफजलने स्वागत किया, और आसन पर बैठनेकी प्रार्थना की। अबुलफजलने सूरिजी की विद्वत्ता की भूरी भूरी प्रशंसा की।

प्रशंसा सुनकर बादशाहके मनोमंदिरमें भाव जग गये। सूरिजी जो माँगे वह दे के उनको प्रसन्न कर देना चाहिये। उसने सूरिजीको प्रार्थना की, कि आप ! अमृत्युल्य समय खर्चकर उपदेश

देके हमारे पर उपकार कर रहे हो। उनका बदला तो नहीं हो सकता, मगर मेरे पर कल्याणार्थ आप मुझे कुछ कार्य की आज्ञा बताये ! आपकी कौनसी सेवा करूं जिससे आप खुश हो।

बादशाह की इतनी भक्ति-इतनी उत्सुक प्रार्थना देखकर सूरिजीको अपना स्वार्थ के लिये, अपना गच्छ के अपना अनुयायी भक्तों के लिये कुछ बात न की। क्योंकि वे समझते थे, कि संसार में सर्वोत्कृष्ट कार्य जीवोंको अभय दान देना है। अतः जब जब बादशाह ने कार्य पूछे-सेवा का लाभ पूछे, तभी उन्होंने जीवोंको सुख-शान्ति-आबादी. अभय दान देनेका बचन मांगा।

इस समय बादशाहने सेवा-कार्य पूछे, तब सूरिजीने कहा, आपको यहाँ हजारों पक्षी दरबारमें बंद हैं, उसको मुक्त कर दो। और डाबर नामका जो बड़ा तालाब है, उसमें से कोई मछलियाँ न पकड़े ऐसा हुकम कर दो।

उस समय वार्तालापमें सूरिजीने पर्युषणका आठ दिन सारे राष्ट्रमें अमारी की उद्घोषणा की जाय ऐसा उपदेश भी दिया।

बादशाहने अपने कल्याणार्थ चार दिन इसमें ज्यादा कर बारह दिनका फर्मान निकालनेकी स्वीकृति कर दी। फर्मान पर शाही महोर और अपना हस्ताक्षर करके सारे सुबोंको भेज दिया। एक फर्मान थानसिंह को दिया। उसने भस्म पर चढ़ाया और बादशाह को फूलों और मोतीयां से बधाया।

एक फर्मान गुजरात-सौराष्ट्र, दूसरा दिल्ली, तीसरा नागौर, चौथा मालवा-दक्षिण, पाँचवा लाहौर-अजमेर, और छठ्ठा सूरिजी को दिया।

इस फर्मानसे लोकमें अनेक प्रकारकी चर्चा होने लगी । केई बोलने लगे, सूरिजी कितने प्रभावशाली है, बादशाह को अपना भक्त बना दिया । कई कहने लगे, सूरिजीने बादशाह की सात पेढी दिखाई । कई अनुमान करने लगे, बादशाहको सोनेकी खाण दिखाई । और कई बोलने लगे, फकीरकी टोपी उड़ा कर चमत्कार बताया । मगर ये सब किंवदन्ती है । ऐतिहासीक सत्यके विरुद्ध है । मगर सूरिजी अपने चरित्र के प्रभावसे सब मनुष्य में सद्भाव उत्पन्न करते थे । उनका मुखारविंद इतना शान्त और प्रभावक था कि क्रोधसे जला हुआ क्रोधी मनुष्य उनके दशन से प्रशान्त बन जाता था । आपके चरित्र के प्रताप से बादशाह आपके वचन को ब्रह्मवचन तुल्य समझते थे ।

क्योंकि अकबरमें यह एक अनुकरणीय गुण था । वे उस महात्मा को ज्यादा सम्मान देता था, जो निःस्पृही-निर्लोभी एवं जगतके सारे प्राणीयों को अपने समान देखनेवाला होता था । इस गुणके कारण बादशाह सूरिजीका सम्मान करता था और उपदेशानुसार कार्य करता था ।

बादशाह और सूरिजी के बीच खुल्ले दिलसे धर्म चर्चा चल रही थी । उस समय सूरिजीने कहा, मनुष्य मात्र को सत्य का स्वीकार करने की रुचि रखनी चाहिये । जीव अज्ञानावस्थामें दुष्कर्म करते है, मगर जब सज्ञानावस्था प्राप्त होती है तब पश्चात्ताप के अग्नमें जल कर शुद्ध हो जाना चाहिये ।

बादशाहने कहा, महाराज ! मेरे सब सेवकें मांस खाते है, अतः आपका अहिंसामय उपदेश अच्छा नहीं लगता । वे लोग कहते है कि, जिस कार्य को सदियों से करते आये है, उस कार्य को छोड़ना नहीं चाहिए ।

एक बार सब सरदार-उमराव इकठ्ठे होकर, मेरे को कहने लगे, बापका सच्चा बच्चा वो है, जो अपने परंपरा से आये हुये मार्ग को छोड़ता नहीं उन्होंने एक उदाहरण दिया । व सुनकर उसका विरुद्ध दृष्टांत मैंने भी दिया । किन्तु वो सब रसनेन्द्रियके लालचू थे । इसलिये छोड़ नहीं सकते ।

महाराज ! दूसरों की बात जाने दो । मैंने भी खुद ऐसे ऐसे पाप किये है । ऐसा किसीने नहीं किया होगा । जब मैंने चित्तोडगढ़ जीत लिया उस समय राणा के मनुष्य-हाथी-घोड़े मारे थे । इतना ही नहीं चित्तोड के एक कुत्तेको भी नहीं छोड़ा था । ऐसे पापसे मैंने बहुत से किल्ले जीते है । सूरिवर ! मुझ को शिकार का भी बहुत शाँख था । मेड़ता के रास्ते पर २२४ हजीरों पर पांचशे-पांचशें हिरण के सींग टोंगाये है । अरे, हर धरमें एक हरणका चमड़ा-दो सींग और एक महोर बाँटी थी । गुरुजी ! आपको क्या मेरी करुण कहानी सुनाऊं, मैं रोजाना पांचशौ-पांचशौ चिड़ियां की जीभ बड़े स्वादसे खाता था । जबसे आपका दर्शन हुआ और उपदेश-वाणीका पालन किया है तब से वह पाप छोड़ दिया । इतना ही नहीं शुद्ध अंतःकरण से मैंने छःमहिने तक मांसाहार नहीं करनेकी प्रतिज्ञा भी की है । अब तो ऐसी माँस से नफरत हो गई है कि हमेशा के लिये मांसाहार छोड़ दूँ ।

सूरि भगवंत बादशाह की सरलता एवं सत्यप्रियता देखकर राजीके रेड बन गये और उनके पर बार-बार धन्यवाद का बारीश बर्षाया ।



इतनेमें देवीमिश्र नामक ब्राह्मण पंडित वहां आये । बादशाहनें पूछा, पंडितजी ! सूरिजी कहते हैं व ठीक है या नहीं । पंडितजीने कहा, हज़ूर ! सूरिजीके वाक्य वेदध्वनि जैसे हैं, इसमें कुछ विरुद्ध नहीं । वे तो बड़े विद्वान, तटस्थ एवं स्वच्छहृदयी महात्मा हैं । इस वाक्य से सूरिजीकी ओर बादशाहकी श्रद्धा बज्रलेपवत् बन गई इसमें कोई आश्चर्य नहीं है ।

समय बहुत हो गया । बादशाह महलमें गये और सूरिजी उपाश्रयमें पधारे ।

सूरिजीकी बार-बार मुलाकात से और विविध विषयकी चर्चा से बादशाह को बहुत आनन्द हुआ । और सूरिजीकी विद्वता से आफ़ीन होकर बोलने लगे, गुरुजी को जैन लोग जैन गुरु की तरह मानते-पूजते हैं । मगर वो तो सारे राष्ट्र को वन्द्य और पूजनीय है । इस लिये उनका भारी सम्मान करना चाहिये । ऐसा सोचकर वे विचारमें बैठ गये ।

एक दिन अपनी राजसभा में सूरिजीको ' जगद्गुरु ' पदसे अलंकृत किया और इस पद-प्रदानके हर्षमें बादशाहनें पशु-पंखीको बंधन से मुक्त कर आजादी दे दी ।

एक बार धर्मचर्चा चल रही थी । उस समय बीरबलको भी प्रश्न पूछनेकी अभिलाषा हुई । इसलिये बादशाह की अनुज्ञा याची । बादशाहने मंजूरी दी । तब बीरबलने शंकर सगुण के निर्गुण, ईश्वर ज्ञानी के अज्ञानी इन दो विषय के प्रश्न पूछे, सूरिजीने तर्क और विद्वताके साथ ऐसा समाधान किया कि, बीरबल सुनकर बड़े खुश हो गये ।

इस मुलाकात के बाद बहुत दिन तक सूरिजीको बादशाह मिल न सके । इसलिये सूरिजीको मिलनेकी सम्राटको बड़ी आतुरता हुई ।

सूरिजी पधारे और प्रभावोत्पादक उपदेश सुनाया। इस बार सूरिजीने सम्राटको महत्त्वका कार्य बतलाया कि, आप ! मेरे कथनानुसार कई अच्छे अच्छे कार्य करते हो। तो भी लोक कल्याण की भावना मेरे अंतरमें प्रगट हुई है कि, आप अपने राज्यमें से 'जजिया' कर उठा लो, जो तीर्थोंमें हर यात्रीके पास टेक्स लिया जाता है व बंद करा दो। क्योंकि इन दो बातों से लोगों को बहुत दुःख होता है, वह नहीं होगा। इससे जन-वर्गमें आनंद की लहर बढेगी और सब आपको कल्याण के आशीष देंगे। उसी समय बादशाहनें दोनों फर्मान लिख दिये।

सूरिजी दिल्लीमें रहे थे। मगर बीच-बीच मथुरा, ग्वालियर आदि तीर्थोंकी यात्रार्थ भी पधारे थे। यात्रा करके पुनःसूरिजी आगरा पधारे तब सदारंग नामक श्रावकनें हाथी, घोडा आदि कई पदार्थों का दान देकर भव्य स्वागत किया था। इधर बहुत समय हो जाने से विजयसेन सूरिजी का बार-बार पत्र आते थे। आप शीघ्र गुजरात पधारिये।

एक बार समय देखकर सूरिजीनें बादशाह को कहा, मेरे को गुजरात अवश्य जाना ही पडेगा। तब बादशाहनें कहा, आप इधर स्थिरता किजीये। आपके सुधा-सदृश दर्शनसे मेरेको बहुत लाभ हुआ है। मगर सूरिजी को जाने का दृढ निश्चयसे बादशाह ने अनुमति दी। और जब तक इधर विजयसेनसूरिजी न पधारे तभी आपके एक विद्वान मुनिवर को इधर रखकर जावे इतनी मेरी आपसे प्रार्थना है।

सूरिजीनें उपा. शान्तिचंद्रजीको रोककर दिल्लीसे गुजरात प्रति प्रस्थान किया।

## शिष्यों द्वारा विशेष बोध :

अकबरने अपनी धर्मसभामें जैसा विजयहीरसूरिजीको पहले श्रेणीमें नाम रखा था। ऐसे पाँचवीं श्रेणीमें विजनसेनसूरि और भानुचंद्रगणि दोनों का नाम रखा था। (आइन. इ. अकबरी ग्रंथ: विजयसेनसूर और भानुचंद्र)

उपाध्याय शान्तिचन्द्रजी महान विद्वान और १०८ अवधान कराने की अप्रतिमशक्तिवाले थे। उन्होंने राजा महाराजाओंको प्रभावसम्पन्न उपदेश सुनाकर बहुत सम्मान प्राप्त किया था। और अनेक विद्वानोंके साथ वाद-विवाद कर विजय-वरमाला के वर बन चुके थे। उन्होंने बादशाह को अहिंसाका भक्त बनानेके लिये २२८ श्लोक प्रमाण 'कृपारसकोष' नामक ग्रंथ बनाये थे। वो ग्रंथ बादशाह को रोजाना सुनाते थे। जिससे फलस्वरूप बादशाह का जन्मका महिना, हर रविवार, हर संक्रान्ति, और नवरोजाके दिनों में कोई भी व्यक्ति जीर्वाहिंसा न करे ऐसा फर्मान बादशाह के पास निकाले थे।

एक दिन बादशाह लाहोर में था। शान्तिचन्द्रजी भी वहां थे। आप इदके अगले दिन बादशाह के पास चले गये। और कहने लगे, मेरे को कल जाने की भावना है।

बादशाहने पूछा, अकस्मात् क्यों जानेका सोचा? तब उपाध्यायजीने कहा, कल इदके दिन हजारों नहीं बल्के लाखों जीवों की कतल होनेवाली है। उनका आर्त्तनाद से मेरा हृदय भारि कंपित हो जायगा, इसलिये जाने का विचार किया है।

सूरिजी के पास बादशाहनें जीवहिंसामें महापाप है । वो बहुत दफे सुना था । अतः उसने अपने उमराव-सरदार-अबुल-फजल और मौलवीआं को बुलाकर मुसलमानों का परम श्रद्धेय धर्मग्रंथ को पढाया । बाद लाहोर में ढंढेरा पिटवा दिया कि कल इदके दिन कोई भी व्यक्ति किसी भी जीवकी हिंसा न करें ।

थोडे दिन बाद उन्होंने बादशाह के पास से मोहरमके महिनें और सूफी लोग के दिनों में तथा बादशाह के तीन लडके जहांगीर, मुराद और दानीयाल का जन्म दिन का महिने में जीव हिंसा नहीं करने का फर्मान जाहिर कराया था । सब मिलकर एक सालमें छः महिनें और छः दिन अधिक अपने सारे राष्ट्र में जीवहिंसा बंद करवाई थी । इतना उन्होंनेका बादशाह पर प्रभाव पड़ा था ।

उपाध्यायजी वहांसे विहार कर गुजरात पधारे, तब भानुचन्द्र और सिद्धिचंद्र गुरु-शिष्य बादशाह के पास थुहरे थे । उन्होंने अपनी विद्वता और कुछ चमत्कारपूर्ण विद्या से बादशाह को बहुत आदरवाले बनाये थे । बादशाह जहां जाते थे वहां भानुचन्द्रजी को साथ में ले जाते थे ।

एक समय की बात है । बादशाह के शिर में बहुत पीडा हुई । वेद्य, हकीमों की दवाई की मगर पीडा शांत न हुई । तब उसने भानुचंद्रजी को बुलाकर, उनका हाथ अपने शिर पर रख दिया । थोड़े दी देरमें दर्द नष्ट हो गया । इनकी खुशाली में उमरावोंने कुर्बान के लिये पांचशौ गाय इकठ्ठी की ।

वो देखकर बादशाह अत्यंत क्रोधावश होकर कहने लगा, मेरा दर्द मिट गया व खुशाली की दिवाली में दूसरें जीवों के दुःखकी होलीहोती है। अतः सब गायोंको छोड़ दो। तत्काल उमरावों ने सारी गायों को छोड़ दी।

एक समय बादशाह काश्मीर गये थे। भानुचंद्रजी भी साथ में थे। बीरबल ने सम्राट को कहा, सब पदार्थ सूर्य से उत्पन्न होते हैं। अतः आप सूर्य की उपासना करो। बादशाह के अनुरोध से सूर्य का सहस्रनाम भानुचंद्रजीने बना कर दिया। बादशाह हर रविवार को भानुचंद्रजी को स्वर्ण से रत्नजडित सिंहासन पर बैठा कर 'सूर्यसहस्रनामाध्यापक' ग्रंथ सुनते थे।

बादशाह के पुत्र शेखुजी की पुत्रीने मूलनक्षत्रमें जन्म लिया। ज्योतिषि कहने लगा, व लडकी जो जिंदा रहेगी तो बहुत उत्पात होगा। अतः उनको जलप्रवाह में बहा दो।

शेखुने भानुचंद्रजी की सलाह माँगी। भानुचंद्रजीने बाल-हत्या का महापाप दिखाकर ग्रह की शान्ति अर्थे अष्टोत्तरी शान्ति स्नात्र पढ़ाने का किया। तब शेखुजीने एक लाख रुपये व्यय कर अष्टोत्तरी शान्तिस्नात्र ठाठ से पढाया। इस दिन सारे संघने अयंबील की तपस्या की थी।

इस पवित्र मंगलिक कार्य से बादशाह और शेखुजीका विघ्न चल गया। और जैन शासन की बड़ी प्रभावना हुई।

उस समय भानुचंद्रजी को उपाध्यायपद देने को बादशाहने सूरिजी पर विज्ञप्ति-पत्र लिखें। उन्होंने मंत्रीत वासक्षेप भेजा।

भानुचंद्रजी को बड़ा समारोह के साथ वाचक पदसे अलंकृत किया गया। तब अबुलफजलने पच्चीस घोड़ा और दस हजार रुपये का दान दिया और संघने भी बहुत दान-सरिता बहाई।

भानुचंद्रजी जैसा विद्वान थे ऐसे उनके शिष्य सिद्धिचंद्र भी विद्वान और शतावधानी थे। बादशाहने उन्हीं का चमत्कार से उन्हें 'खुशफरम' की पदवी दी थी। सिद्धिचंद्रने, बुरहानपुरमें बत्तीस चोर मारे जाते थे उनको बादशाहकी आज्ञा लेकर छुड़ाये थे। और एक बनिया हाथी के पाँव नीचे मारा जाताथा उनको भी छुड़ाया था। उनका फारसी भाषापर अच्छा प्रभुत्व था।

बादशाहने सिद्धिचंद्रकी साधु धर्मकी परीक्षा करने के लिये पहले बहुत धनवैभव का लोभ दिखाया। मगर जब वह चलित न हुवे तो उन्होंने मारने की भी धमकी दी, उससे भी वो डरे नहीं। बल्कि उन्होंने बादशाह को ऐसे-ऐसे खुल्ले शब्दोंमें सुना दिया कि बादशाह सुनकर उनके चरणकमलमें अपना शिर डालकर भावपूर्ण वंदना करने लग गया।

एक बार बादशाह लाहौरमें था। अकस्मात् उनको सूरिजी को बुलाने की मनोकामना हुई। अबुलफजल को बुलाया, और सूरिजीको आमंत्रण देनेको कहा, तब अबुलफजलने कहा, नामवर ! वो तो बड़े वृद्ध हो गये हैं, मगर विजनसेनसूरिको आमंत्रण दो, सूरिजीने भी उनको भेजने का वचन दिया है।

तब बादशाहने सूरिवर पर श्रद्धा पूर्ण ऐसा भाव-सभर पत्र लिखा कि पढ़कर सूरिजी गहन विचार-धारामें लीन हो गये। एक

तरह अपनी वृद्धावस्था और दूसरी तरह शासन-उद्योग के कारण बादशाहकी विजयपति ; 'इतो व्याघ्रः इतो दुस्तटीः' ऐसा सूरिजी को हो गया । मगर सूरिजीने निजी-स्वार्थको गौण करके विजयसेन सूरिजीको दिल्ली जाने की अनुज्ञा दी । उन्होंने भी गुरु-आज्ञा शिरो धार्य करके वि. सं. १६४९ मा. सु. ३ को प्रयाण किया ।

विजयसेन सूरिजी विचरते-विचरते ज्येष्ठ सुद १२ के मंगल दिन लाहोर पधारे । तब भानुचंद्रजीने संघ के साथ भव्य स्वागत-यात्रा निकाली थी । उनमें बादशाहने हाथी-घोडा-शाही बॅन्डपार्टी आदि भेज कर स्वागत की शोभा द्विगुण बढ़ा दी थी ।

बादशाहके पास विजयसेनसूरि बहुत दिन रहे थे । एक दिन उन्होंने के शिष्य नंदिविजयजीने विधविध देशोंके राजवीरोंसे युक्त राजसभामें अष्टावधान किया । तब आपके कौशल्य से चमत्कृत होकर बादशाहने 'खुशफहम्' पद से आपको विभूषित किया ।

विजयसेनसूरिने बादशाहके हृदय-पट पर ऐसा प्रभाव डाला था कि उन्होंनेका आप के उपर बहुत पूज्यभाव हो गया था । इस कारण आपका ज्यादा ज्यादा सम्मान करते थे, और बड़े बड़े उत्सवोंमें सहायता भी देते थे ।

आपका भारी सम्मान देखकर कई ब्राह्मण आदिने अकबर के दिलमें यह बात ठोंस दी, कि जैन लोग इश्वरको नहीं मानते हैं, गंगाको पवित्र नहीं मानते हैं, सूर्यदेव को नहीं मानते हैं । उक्त कथनसे भोले बादशाह को चोट लग गई । उसने विजयसेनसूरि

को बुलाया, और उक्त विषय के प्रश्न पूछे, सूरिजीने कहा, आपकी अध्यक्षतामें एक सभा बुलाकर उसका निर्णय करेंगे।

बादशाहनें एक दिन मुकरर किया। एक तरह विद्वान् ब्राह्मण पंडित आये दूसरी तरह विजयसेनसूरि - नंदीविजय आदि पधारे। दोनों पक्षोंने अपना-अपना मतका प्रतिपादन किया। इसमें विजयसेनसूरिनें तर्क और प्रभावोत्पादक युक्तियांसे ऐसा निरसन किया कि सारी सभा स्तब्ध हो गई और पंडितजी निरुत्तर बन गये। वहां बादशाहनें प्रसन्न होकर 'सूरिसवाइ' की पदवी देकर आपका बहुमान किया।

विजयसेनसूरिनें अपने उपदेशके प्रभावसे गाय-भैंस-बेल आदि का हिंसा का निषेध और मृत मनुष्यका कर बंद कराये थे। और चार महिनें तक सिंधु नदी और कच्छ के जलाशयोमें से मछलीयां नहीं मारने का फर्मान भी निकलवाया था।

“ लब्धिवाणी ”

श्रद्धा को स्थीर रखे, वही  
वास्तविक ज्ञान है !



## सुबाओं को प्रतिबोध :

हीरसूरिजी महाराजनें अकबर को जैसा प्रतिबोध दिया, ऐसे राजा-महाराजा और सुबाओं को भी बोध दिया था । क्योंकि बादशाह को सरलता से समजा सकते है । मगर सुबाओं तो सत्ता के मद से मस्त होते थे और अहमेन्द्र थे । और उस समय अराजकता भी बहुत चलती थी । इसलिये जुल्मी भी वो बहुत थे ।

वि. सं. १६३० सालमें पाटण के सुबेदार कलाखां बहुत जुल्मी थे । उसका नाम सुनके प्रजा कंपित हो जाती थी । ऐसे जीव को भी उपदेश के जल से शान्त बनाकर, जिस बंदी को प्राणदण्ड की सजा दी थी । उसको मुक्त कराया और सारे नगर में एक महिना की अमारि की उद्घोषणा कराई ।

सूरिजी वापिस गुजरात आ रहे थे । तब मेडता के सुबा खानखाना नें मुलाकात की । वो मुसलमान थे, इसलिये उन्होंने मूर्तिपूजा के विषय में प्रश्न पूछे, सूरिजीनें ऐसा समाधान दिया कि, उसने खुश होकर सूरिजी को बहुत मूल्यवान पदार्थों की भेट दी । सूरिजीनें वो नहीं ग्रहण करके अपना धर्माचार का ब्यान दिया । जिससे वो सूरिजी पर आफीन हो गये ।

सिरोहीके आंगणमें सूरिजी पधारे । तब वहां का राजा महाराव सुरतान पर ऐसा उपदेश का प्रभाव डाला कि, प्रजा पर जुल्मी कर लेते थे वो बंद करा दिया । और बिना कारण एकसो श्रावकों को जेलमें डाला गया था । जिससे सारे संघमें हाहाकार की करुण हवा प्रसर गई थी । सूरिजीनें कोई कारण बताकर

सब मुनिवरों के साथ आयंबील कर महाराजासे भेट की ।  
और ऐसा प्रभावोत्पादक बोध का धोध बहाया कि राजानें उसी  
दिन शामको सबको मुक्त कर दिया ।

ऐसे खंभात के सुल्तान हबीबुल्लाह, अहमदाबाद के सुबा  
आजयखां, पाटण के सुबा का सीमखाँ, (वि. सं, १६६० के समय  
सिद्धाचल यात्रा संघ में जाते समय अहमदाबाद में सुलतान मुराद  
(अकबरके पुत्र) आदि कई राजाओं, सुबेदारों को उपदेश-वारि से  
बोध देकर अहिंसा देवी का साम्राज्य प्रसारा था और शासन की  
महाप्रभावना की थी ।

“ लब्धिवाणी ”

जैसे-जैसे तृष्णा तरुण होती है वैसे-वैसे मोह  
अरुण होता है । मोहकी मस्ती दुरकरनी  
होतो धर्मकी मस्ती उत्पन्न करो !

“ लब्धिवाणी ”

संतति को संस्कारी बनाने के लिये  
माँ-बाप और बडीलोगोंको प्रथम  
अपना संस्कारी जीवन बनाने की जरूरत है ।

## दीक्षाकी कतार और शिष्य संपदा :

समय-समय का कार्य कर रहा है । कोई समय बर्शन के उदय का आता है तो कोई समय ज्ञान का आता है ।

ऐसे हीरसूरिजी का समय चारित्रका था । उनके चारित्र के प्रबल प्रतापसे चारों ओर दीक्षाकी बंशी बज रही थी ।

भलभला गर्भश्रीमंत-विद्वान-कमल जैसे सुकुमालांगी सारे कुटुम्ब के कुटुम्ब पारमेश्वरी प्रव्रज्या के पथिक बनकर मुक्ति-मार्ग पर चल जाते थे ।

सूरिजी की ऐसी प्रभावक देशना-शक्ति थी । पर गच्छ के साधु सत्यमार्ग में आ जाते थे ।

वि. सं. १६२८ साल की बात है । लोंकामतके अग्रेसर मेधजी ऋषि ने मूर्तिपूजा की सत्य श्रद्धा हो जाने से त्रीश मुनिबर के साथ सूरिजी के पास आकर संबिग्न संयम की स्वीकृति की । और उनके कई गृहस्थ अनुयायी सूरिजी के भक्त हो गये थे ।

वि. सं. १६३१ में खंभात में सूरिजीने ग्यारह मनुष्यकों दीक्षा के यात्री बनाये थे ।

पाटण के निवासी अभयराज नामके गर्भश्रीमंत गृहस्थ दीवमें व्यापार कर रहे थे, उसकी लडकी गंगाकुमारी के दीक्षा निमित्त से पिता-पुत्र-पत्नी-पुत्री- भाई की पत्नी और चार अपने

सेवकें और खंभात के एक भाई सब मिलकर दश भाई-बहिनों की खंभातमें बड़े उल्लास से दीक्षा हुई थी । उन्होंने का तीन महिने तक वायणां आदि शुभकार्य हुआ था । दीक्षा में उस समय का चलनीनाणा महमुंदी का पैंतीस हजार का खर्च हुआ था ।

तीसरे प्रकरण में जिस रामजी लडको की बात जो आप पहले पढ चुके है । उन्होंने चारित्र की प्रबल भावना से शादी नहीं की थी । उनको पिता और बहिन दीक्षा नहीं दिलाते थे इसलिये उसने भगकर दीक्षा अंगीकार कर ली थी । मेघविजय आदि ग्यारह मनुष्यों ने भी दीक्षाली थी । अहमदाबाद एक ही साथ अठारह मनुष्यों की दीक्षा सूरिजी के वरद हस्ते ठाटबाट से हुई थी ।

बादशाह के पास जेतारण नामक गृहस्थ था । वो बादशाह का कृपापात्र था । उन्होंने भी दीक्षा की भावना हुई । उसने बादशाह की अनुमति माँगी । बादशाह ने उसकी परीक्षा कर आज्ञा दे दी । उसकी ठाठ से दीक्षा होने से जीत विजयजी 'बादशाही यति' के नामसे प्रसिद्ध हुये ।

एक बार आप सिरोहीमें बीराजते थे । रात को स्वप्न आया कि, हाथी के चार बच्चे सुंढमें पुस्तक लेके पढ रहे है । सुबह सूरिजीने सोचा, चार महान शिष्य का लाभ होंगे । थोडे ही दिनमें रोह का (आबू के पास) सुप्रसिद्ध श्रीवंत शेठ अपने चार पुत्रों-पुत्र-बहिन-बहनोइ-भाणजा और अपनी स्त्री के साथ सिरोही में दीक्षा लेने को आये थे । इसमेंसे कुंवरजी लडका आगे जाकर आ. विजयानंदसूरि बने थे ।

सिरोही में वरसिंह नामक बहुत धनी-मानी गृहस्थ था । उनके ब्याह की तैयारी चल रही थी । मंडप डाला गया था । सुबह-शाम शहनाई के बाजा बज रहे थे । सुहागण स्त्रिएँ घबल मंगल गीतें मधुर कंठ से ललकार रही थी । वरसिंह चुस्त धर्मी थे । रोजाना सुबह शाम सामायिक-प्रतिक्रमण उपाश्रयमें करते थे । इस दिन उसने सामायिक सुबह लिया था । तब उनकी भाविपत्नी पू. सूरिजी को वंदनार्थ आकर वंदन करके पीछे, सूरिजी के पास बैठे हुये वरसिंह को भी उसने वंदना की । थोड़े दूर बैठे हुये एक भाईनेँ कहा, अब तो तुझे दीक्षा लेने पड़ेगी । क्योंकि तेरी भाविपत्नी तुझको वंदन करके अभी गई । तब उसने कहा, जरूर मैं दीक्षीत बनूंगा । अब वो घर पर गये, सारा कुटुम्ब को इकट्ठा किया और अपनी दीक्षा की बात जाहिर की । बहुत अरसपरस चर्चा हुई । अंत में उनको विजय मिली । ये ही शादी का मंडप दीक्षा के मंडप में परिवर्तन हो गया । और ठाठ से उनकी दीक्षा हुई । आप आगे पंन्यास हुये और १०८ शिष्य के गुरु बने थे ।

इसलिये विदित होता है कि सूरिजीनेँ १०८ आदमीओं को दीक्षा दी थी । १०८ साधुको पंडित पद और सात साधुको उपाध्यायपद दिया था । आपको प्रबल पूर्व की पुण्याई से सब मिलाकर दो हजार साधु की संपदा थी याने आप दो हजार साधु के नेता थे । नेता हो जाने से प्रशंसा नहीं होती मगर समुदाय का संगठन, शासन के हित और रक्षा के लिये सदैव कटिबद्ध रहना वो सर्वश्रेष्ठ सराहनीय था । आपने अंतः तक वे कार्यका पूर्णपालन किया था ।

सूरिजी के मुनिवरों में कई व्याख्यानविशारद और कवि थे । कई योगी ध्यानी एवं उग्रतपस्वी थे । शतावधानी-क्रिया कांडी एवं तार्किक-नैयायिक थे । और साहित्य इत्यादि भिन्न-भिन्न विषय के प्रकांड विद्वान भी थे । जिससे अनेक लोगों प्रभावित होते थे । इसमें से दो-तीन अग्रणी आचार्यादि श्रेष्ठ मुनि पुद्गव की पहिचान कराता हूं । जो सूरिजी के बड़े आज्ञांकित और माननीय थे ।

**विजयसेनसूरि** --- आपका जन्मस्थान नाडलाइ थे । जब आपकी सात साल की उम्र थी तब पितानें संयम लिया था । और नौ साल की उम्र हुई तब आपने, अपनी माता के साथ सुरत में वि. सं. १६१३ ज्ये. सु. १३ के मंगल दिन दीक्षा ली थी । आप इतने विद्वान थे कि आपने योगशास्त्र के प्रथम श्लोकका ७०० अर्थ किया था । आपको वि. सं. १६२६ में पंन्यासपद और वि. सं. १६२८ में उपाध्याय और आचार्यपद से अलंकृत किया गया था । अहमदाबाद-पाटण-कावी आदि नगरों में चार लाख जिनबिम्बों को आपने प्रतिष्ठा की थी । और तारंगा-आरासर-सिद्धाचल आदि मंदिरों का जिर्णोद्धार भी कराया था । जब आप गच्छनायक हुये थे । जब आप गच्छनायक हुये थे, तब आपके समुदायमें ८ उपाध्याय, १५० पंन्यास और बहुत साधु विद्यमान थे । आप ६८ साल की आयु पूर्णकर खंभात के परा-अकबरपुरमें स्वर्ण सिंघाये थे ।

**शांतिचन्द्रजी उपाध्याय** — आपके गुरु सकलचन्द्रजी थे । आपने इडर और सुरत में दिगंबराचार्य के साथ वाद करके

विजय प्राप्त किया था । वि. सं. १६५१ में आपने जंबुद्वीपपत्रति की टीका की है । आपके चारित्र के प्रभाव से वरुणदेव आपके सदा सान्निध्य में थे । इसलिये आपने बादशाहको कई चमत्कार बताकर अहिंसा और शासनकी प्रभावना प्रसारी थी ।

**पाठकवर भानुचन्द्रजी** — आपके जन्मभूमि सिद्धपुर थी । आप लडकपण से बहुत चतुर थे । आपको दुसरा भाई भी था । आप दोनों के साथ में प्रव्रजीत हुये थे । आपकी विद्वता और योग्यता से सूरिजीने बादशाहके पास आपको रखा था । उन्होंने का ऐसा प्रभाव बादशाह पर पडा था कि वो आगे के प्रकरणमें देख गये है । अकबर के देहांत बाद भी भानुचंद्रजी पुनः आगरा गये थे, और जहांगीर के पास फरमानें कायम रखने का और उन्हें पालन कराने का हुकम कराया था । जहांगीर को भानुचन्द्रजी पर बहुत श्रद्धा थी । आपने बुरहानपुरमें उपदेश के प्रभाव से दस नये मंदिर बनवाये थे । जालोंर में एक ही साथ एकतीस पुरुषों को आपने दीक्षा दी थी । आपको तेरह पंन्यास और ८० विद्वान शिष्य थे ।

ओर भी वाचक कल्याणविजय, पधमसागरजी, उपाध्याय धर्मसागरजी गणि, सिद्धिचन्द्रजी, नंदिविजय, हेमविजयजी आदि भी धुरंधर मुनिवर थे । उन्होंने भी स्व-पर कल्याण के कार्य कर शासन की विजयपताका चारों ओर लहराई थी ।

“ लब्धिवाणी ”

हाथ का भूषण हेन्डवाँच नही मगर दान है,  
कंठ का भूषण सौ तोलेका सोने का कंठा  
नही मगर सत्य वचन है ।

## सूरिजी का स्वर्गगमन :

सूरिजी दिल्ली से बिहार करते-करते नागोर पधारे थे । इधर जैसलमेर के संघ वंदनार्थ आये । उन्होंने सूरिजी की सोनैया से पूजा की थी । आप इधर से पीपाड पधारे तब खुशाली में ताला नामक ब्राह्मणनें आपके स्वागत में बहुत धन व्यय किया था । वहां से आप सिरोही-पाटण-अहमदाबाद होकर राधनपुर पधारे । संघनें छः हजार सोनामहोर से आपकी गुरु पूजा की थी ।

पुनः आप पाटण पधारे, उस समय आपको एक स्वप्न आया, “ मैंने हाथी पर बैठकर पर्वतारोहण किया, और हजारों लोग वंदन कर रहे हैं ।”

आपने सोमविजयको स्वप्न सुनाया, सोमविजयजीने कहा, आपको सिद्धाचल की यात्रा का महान् लाभ होगा ।

थोड़े ही दिनों में आपकी पुनित निश्चा में पाटण से सिद्धाचलका छ'रीपालक संघका प्रस्थान हुआ । गुजरात-काश्मीर-बंगाल-पंजाब के बड़े-वड़े शहरों में आदमियों को भेजकर संघ में पधारने की विनंति की गई । बहुत लोग संघ लेकर आये । इस संघमें ७२ संघवी थे । इनमें श्रीमल्लसंघवी के ५०० रथ थे ।

सोरठके सूबेदार नौरंगखांको विदित हुआ, सूरिजी बड़े संघ के साथ आ रहे हैं । उस समय उसनें आनेवानी लेकर आपका भव्य स्वागत किया । इस संघमें पचास गांव-नगरोंका संघो



सम्मिलित हुये थे। कहा जाता है कि, इस यात्रा-संघमें एक हजार साधु और दो लाख मनुष्य थे। पालीताणामें आपको वंदना करते हुये डामर संघवीनें सात हजार महामुंदिका (चलनी नमणा) का व्यय किया था।

दीवबंदर की लाडकी बाई नामक श्राविकानें विज्ञप्ति की, कि आप सब जगह सग्यगज्ञान का प्रकाश डालते हो मगर हम लोग तो अंधेरे में गीरे हैं।

सूरिजीने कहा, आपकी भावना हो ऐसा होगा। उस समय एक आदमीनें पालीताणासे दीवबंदर जाकर संघ को सूरिजी की पधारने की वधामणी दी। संघनें उसको चार तोले की सोनेकीजीभ, वस्त्र और बहुत लहारीयाँ भेंट दी।

आप, पालीताणासे महुषा आदि होकर उना पधारे। उस समय जामनगर के दीवान अबजी भणसालीनें आकर आपकी और सब साधुकी स्वर्णमुद्रासे नव अंगकी पूजा की और एक लाख मुद्राका लुंछन किया, इतना ही नहीं याचकोंको बहुत दान भी दिया।

अब अपन सूरिजीके आंतरिक गुण-श्रेणी बताकर इन सुगुण-मौक्तिकसे अपना जीवन सभर बनाईये।

सूरिजीमें क्षमा-समता-दाक्षिण्यता-गुरुआज्ञा इत्यादि गुण इतना ओतप्रोत था कि, जब अपने उनके जीवन-चर्या के एक-दो प्रसंग देखेंगे तो विदित हो जायगा।

एक बार गोचरीमें खीचड़ी अत्यंत खारी आई थी। वे खीचड़ी सूरिजीके खानेमें आई। आप मौन होकर आहार कर गये। पीछेसे श्रावक दौड़ते-दौड़ते आये और कहने लगा, महाराज मेरी बहुत गलती हुई माफकरें। साधुने पूछा, क्या हुआ? उसने उक्त प्रसंग को सुनाया। शिष्यों, सूरिजीके मौनसे दिग्मूढ हो गये, और बोलने लगा, आपने रसनेन्द्रिय पर कितना काबू लिया है। आप रोजाना बारह द्रव्य (चीज) आहारमें लेते थे।

एक बार आपके कमर में फोडा हुआ था। वो बहुत पीडा कर रहा था। रातको एक श्रावकने भक्ति करते हुये अपनी अंगूठी से वो फोडा फुट गया। खून बहने लगा। इस समय आपको इतनी पीडा हुई कि, आपने एक भी शब्द अपने मुँह से नहीं निकालकर उस पीडाको सहन किया। सुबह सोम विजयजीने पडिलेहण समय उत्तरपटो (चादर) रक्तवर्णों दिखें। सूरिजीने रातकी बात सुनाई। श्रावकका अविनयसे शिष्य को खेद हुआ। मगर सूरिजीने ऐसा उत्तर दिया कि, साधु मंडली गुरुवरके सहनशीलता पर मुग्ध हो गई।

गुरुदेव के प्रति आपकी भक्ति भी इतनी थी कि, एक समय गुरुदेव विजयदानसूरिजीने आपको पत्र भेजा। शीघ्र पत्र पढकर आ जावें।

आपने पत्र पढे, उस दिन आपको छट्ट (दो उपवास) था। श्रावकोंने पारणा के लिये बहुत आग्रह किया। मगर अपन तुरत ही बिना पारणा किये विहार करके गुरुवर के पास पहुँच गये।

जब गुरुवरको मालुम हुआ तब आपकी गुरुभक्ति पर गुरुदेव अत्यंत प्रसन्न हो गये ।

आप, एकांतमें घंटोंतक खड़े - खड़े ध्यान करते थे । कितनी बार तप्त हुई वालुका पर बैठकर आत्मापना लेते थे । एक बार सिरौहीमें खड़े-खड़े ध्यान करते थे, सहसा चक्कर आनेसे गीर गये । सब साधु सोते हुये उठ गये । सबने आपको विनंति की, कि आपका शरीर अब बलहीन हो गया है । इसलिये बैठे-बैठे ध्यान कीजिये । आपके सुखाकारी से संघमें और समुदायमें क्षेमकुशल रहेगा । तब आपने नश्वरदेहका ऐसा महिमा समझाया कि, सब मुनि स्तब्ध हो गये और आपने देह पर का ममत्व कितना दूर किया है उनकी प्रशंसा करने लगे ।

आप, जैसे ज्ञानी-ध्यानी-अष्टप्रवचनमाताके पालनमें सतत उपयोगशील थे । ऐसे तपस्वी भी बहुत थे । आपने अपने जीवनमें ८१ अठ्ठम, २२५ छठ्ठ, ३६०० उपवास, दो हजार आयंबील, दो हजार नीवी के साथ वीशस्थानक तपकी वीश बार आराधना-तपस्या की थी । तीन महिनें तक ध्यानमें बैठ कर सूरिमंत्र का जाप किया था । और तीन महिनें दिल्ली में एकासन-आयंबील-नीवी एवं उपवास किया था । ज्ञान की आराधनार्थ २२ महिनें तपस्या की और गुरुतपमें २३ महिनें तक छठ्ठ-अठ्ठम आदि किया था । रत्नत्रयीके आराधनके लिये २२ महिनें बारह प्रतिमा वहन की थी ।

आपके देहमें वय और अशुभोदयसे रोग आक्रांत हो गये थे । आपने औषध लेनेका बंद कर दिया । संघमें हाहाकार

मच गया। श्रावकोंने उपवास करके, और श्रावीकाओंने बच्चाओंको स्तन पान कराना बंदकर हड़ताल पर उतर गये, और उपाश्रयमें सूरिजी दवाई ले इस लिये बैठ गये।

सोमविजयजी आदि साधु के अति आग्रहसे अपनी इच्छा विरुद्ध औषध लेनेकी स्वीकृति की। चंद्रको देखकर सागर उमटता है ऐसे संघमें हर्षका सागर उछल पडा।

गच्छकी चिंता और शासनके हितके कारण आपने विजय सेन सूरिको बुलानेकी तीव्र उत्कंठा हुई। साधुओंने मुनि धनविजयजी को उग्र विहार कराकर लाहोर भेजे। बादशाहकी आज्ञा लेकर विजयसेनसूरिनें उनाकी ओर विहार कर लिया। जैसी आपको शिष्यको मिलनेकी तमन्ना थी ऐसी उन्होंने भी शीघ्र आपकी सेवामें पहुँचने की उम्मेद थी।

विजयसेनसूरि जैसे उग्र विहार कर रहे थे, ऐसे इधर भी सूरिजीके देहमें रोग तीव्र रूप पकड़ रहे थे।

चातुर्मास आया, पर्युषणा आया। अभी विजयसेनसूरिजी नहीं आये। चिंता से आप अत्यंत व्यथित हो रहे थे। वाचक कल्याणविजयजी, वाचक बिमल हर्ष और सोमविजय ने कहा, गुरुवर ! आप निश्चित रहें विजयसेनसूरिजी शीघ्र आ रहे हैं।

पर्युषणमें कल्पसूत्र का व्याख्यान आपने ही दिया। इससे परिश्रम बहुत पडा और स्वास्थ्य ज्यादा शिथिल बना।

वि. सं. १६५२ के भा. सु. १० की मध्यरात्रिको आपने वाचक विमल हर्ष आदिको बुलाया। और कहने लगा, विजय सेनसूरिजी आये नहीं। इसलिये जैसी आप सबने मेरी आज्ञा और सेवा उठाई है, ऐसी विजयसेनसूरिकी सेवा और आज्ञा का पालन करना। समुदायमें सदा संघठन रखना और शासन प्रभावना जैसी होवे ऐसी रीतिसे वर्तना। ऐसा मेरा अनुरोध है—आज्ञा है।

और मैंने अभी तक सबको सारणा-वारणा आदि प्रकारसे सब कुछ कहा होगा। इस लिये सबको खमाता हूँ—मिच्छा-मिदुक्कडं देता हूँ। जाणे कोई हृदयमें वज्र न डालता हो ऐसी हृदय-द्रावक सूरिजीकी बाणी सुनकर शिष्योंका हृदय फुटने लगा और नेत्र में से अविरत अश्रुधारा बहने लगी।

सोमविजयजीने कहा, आपने तो हमको पुत्र जैसे पालन किया है। अंधेरेमें गिरे हुये को प्रकाशमें लाये हो। आपका हमने बहुत अपराध—गुन्हा किया है। आप तो गुणके सागर हैं। अतः त्रिविध-त्रिविध हम सब आपको खमाते हैं। आप, क्षमा दान करें।

आपने सकल जीवराशिको क्षमापना करते हुये चारशरणां, सुकृतका अनुभोदन और दुष्कृतकी गद्दी की। सुबह हुई। भा. सु. ११ का दिन सुबहसे सारा उपाश्रय श्रावक-श्राविकासें ठसों ठस भर गया। आप तो ध्यानमें लीन हो गये थे। शाम हुई, प्रति क्रमण किया। बाद आप, पद्मासनमें बैठकर हाथमें माला लेकर अरिहंतध्यानमें मस्त बन गये। चार माला पूर्ण हुई! पाँचवीं माला गीनते-गीनते सहसा गिर पड़े, और आत्म-हंसलो देह-

पिंजरको छोड़कर स्वर्ग प्रति मुक्त बन कर चला गया। वहाँ जय जय नंदा के घंटानाद हुआ। इधर गुरु विरह का आर्त्तनाद गुंज उठा। आप, ५६ साल का सुविशुद्ध संयम पालन करके ६९ साल की आयुः पूर्ण कर स्वधर्म पधारें।

गाँव गाँव में कासीद द्वारा कालधर्मका समाचार भेजा गया। इधर सारा जैन-जैनेतर वर्ग एकत्र हुआ। आपकी अंत्येष्ठी क्रिया कराई। तेरह खंडका भव्य विमान जैसी पालखी बनाके इसमें आपके विभूषित शबको पधराये। हजारों लोगोंने विविध प्रकारकी दानकी निधि उछालीं। घंटानाद बजाया। श्मशान-यात्रा गाँव बाहर आंबावाडीमें आई। इधर शबको चितामें पधराया, तो संघके हृदयमें से नेत्रों द्वारा अश्रु बाहिर आये। चिता प्रगटावाइ और इसमें १५ मण चंदन-५ मण अगर-३ शेर कपूर-२ शेर कस्तुरी-३ शेर केसर और ५ शेर चूआ डाला गया। पार्थिव देह नष्ट हो गया मगर यशोदेह स्थिर रह गया। सब साधुओंने आपके विरह-वेदना से अठुम किया था।

जहाँ आपका अग्नि संस्कार हुआ था। इसके आसपास की २२ वीघें जमोन बादशाहने जैन संघ को अर्पण की थी। वहाँ स्तुप बनाकर पगलांकी प्रतिष्ठा की गई।

इधर विजयसेनसूरिजी उग्र बिहार करते भा. व. ६ के दिन पाटण पधारे। आपने सोचा, गुरुजीका सुखद समाचार सुनेंगे। किंतु इधर तो आपको हृदय-भेदक गुरुवरका कालधर्मका समाचार मिले तुर्त ही निश्चेत बनके गीर गये। और

भगवान गौतम स्वामीकी तरह गुरु-विरह के मारा अति हृदयफाट आक्रंद के साथ ज्यादा बोलने लगे। तीन दिन ऐसा रहा। पाटणका सारा संघ एकत्र हुआ। आपको बहुत समझाया और चित्त स्वस्थ कराया। आपने आहारपाणी लिया : वहांसे आप उना की ओर पधारे।

इधर चमत्कार एक ऐसा हो गया कि, जब सूरिजीको अग्निदाह दिया। तब सारे आमवृक्ष पर फल-महोर आ गये। वंध्य आम के पेड़ थे इस पर भी फल आ गये। वैशाखमें आने वाले आम फल भाद्रपद में कैसे आये सब आश्चर्यमें पड़ गये। सब फल बड़े-बड़े शहरमें, अबुलफजलकी और बादशाहको भेजे गये, और सूरिजीका चमत्कारका पत्र भेजा गया। जिससे बादशाहकी सूरिजी के प्रति भक्ति-श्रद्धा और बढ़ गई और उन्होंने स्तुति भी की।

वह स्तुति बादशाहके शब्दोंमें प्रस्तुत कर चरित्र समाप्त करताहूं। “उन जगद्गुरुका जीवन धन्य है। जिन्होंने सारी जिंदगी दूसरोंका उपकार किया। और जिनके मरने पर (असमयमें) आम फले और जो स्वर्गमें जाकर देवता बनें।”

“इस जमानेमें उनके जैसा कोई सच्चा फकीर न रहा।”

“जो सच्ची कमाई करता है वही संसार से पार होता है। जिसका मन पवित्र नहीं होता है, उसका मनुष्य भव व्यर्थ जाता है।”

# श्री लब्धि-भुवन जैन साहित्य सद

: प्रकाशने :



आवश्यक कर्णिका  
जिनगुण गरबावली  
तपोधनोनी बत्रीशी  
समवसरणस्तव-पद्य  
चारगतिबजार-पद्य  
शत्रुंजय-गुणगुंजन

” हिन्दी

गुरु गीत गंगा  
मलयसुंदरी चरित्र-संस्कृत  
नवपद आराधन विधि  
ललितविस्तरा भा. १

” भा. २

आत्म निदर्शन  
जिनेन्द्र स्तवन चोविशि  
भुवनेश भक्ति वहेण  
दशवैकालिकसूत्र  
वाक्य वाटिका भा. १

” भा. २

अन्तरिक्ष त

”

गुणगुंजन

उत्तराध्ययनसूत्र भा. १

” भा. २

जिन पूजा प्रभाव-गुजराती

” हिन्दी

डगले पगले निधान

आश्चर्यायीघटका (मराठी)

चमत्कारिसरोवर ”

लब्धिसूरीश्वर मृत्युक्षणकाव्यम्  
(संस्कृत)

तत्त्वन्याय विभाकर भा. १

” भा. २

नमस्कार-स्मरणिका

जगद्गुरु हीरसूरीश्वरजी

भक्ति दीपिका (प्रेशमें)

: प्राप्तिस्थान :

श्री अमीचंद धनराज

गोसा हॉस्पिटाल रोड

अदोनी (आन्ध्र प्रान्त) (जि. कर्नुल)